❀ समर्पण ❀

—०—

पूज्य श्री सन्त महान्त महानुभाव—

महाशय प्रार्थना यह है कि आप सब तो राम नाम परत्व को जानने वाले हैं आप सब के सामने कुछ कहना सूर्य के सामने दीपक दिखाना है तथापि अपना विनीतता आप, श्रीसीता राम नाम प्रताप प्रकाश नामक ग्रन्थ का पठन-पाठन करते हुए इस दीन को अर्थात् मुझे आशीर्वाद प्रदान करेंगे।

यथा—

सन्त चरण पंकज अति प्रेमा।
मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा ॥

सीता राम चरण रति मोरे।
अनुदिन बढ़हिं अनुग्रह तोरे ॥

प्रार्थी—
महान्त गंगा दास
पुरी वाले

श्री राम मेरा प्यारा है अपने राम जी को गोदी खिलौबै।
चुनि चुनि फूलन क हार बनौबै राम जी को हार पहिनौबै ।। राम०
छप्पन भोग छत्तीसौ व्यंजन रुचिकर भोग लगौबै।
कनक जड़ित मणि पलंगा बिछौबै फूलन सेज सजौबै ।। राम०
गंगादास की आस पूर्ण भई अपने दुलरू को–
गोदी सोऔबै ।। राम मेरा प्यारा है ।।

चौ०-मूक बदन जस शारद छाई ।
मानहु समर सूर जय पाई ।।

परम रंक जनु पारस पावा ।
अन्धहिं लोचन लाहु सुहावा ।।

दो०–तेहि सुखते शत कोटि गुण, पावहि गुरु आनन्द।
जिनकी मंजुल गोद में, खेलहिं रघुकुल चन्द ।।

राम सुनि लो मेरी मैं शरण हूँ तेरी बेगि आओ,
दास गंगा की गोदी दुलारे न रहो मेरे नैनों से न्यारे।
शिष्य है तू मेरा मैं गुरु हूं तेरा मत रुलाओ। बेगि० ।।

सब दुख दुसह सहाबहु मोहू ।।
लोचन ओट राम जनि होहू ।।

आओ-आओ न देरी लगाओ-

आया-आया न देरी लगाया ।

"श्रीरामनाम कल्पतरु"
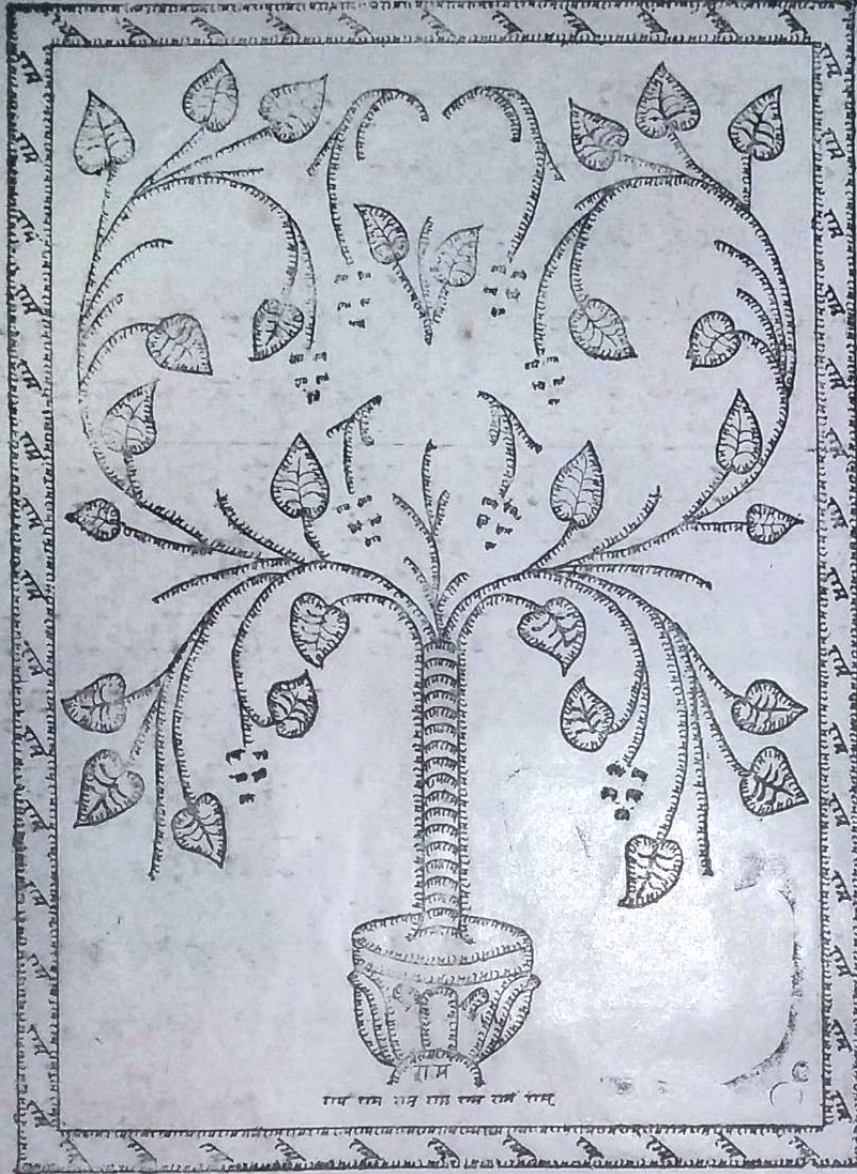
कवित्त

जड़ मूल में रकार फल फूल में रकार ।
कूल तूल में रकार औ रकार डार-डार है ॥
पेड़ पात में रकार बात-बात में रकार ।
सात द्वीप में रकार नवौ खण्ड में रकार है ॥
जल थल में रकार सुतल वितल में रकार ।
तलातल में रकार रसातल के पार है ॥
जै रकार तै प्रकार वाणी है ओंकार ।
स्वरूप है निराकार पै रकार श्रीराम है ॥
ये ही है अमर मन्त्रः-"जेहि जपत महेसू" ।

श्री राम जी का आश्वासन

गुरु सुन लो मेरी, मैं गोदी हूँ तेरी न भुलाया,
आया आया न देरी लगाया ॥
गुरु प्यारे मेरे, मैं दुलारे तेरे न रुलाया
लैलो गोदी मुझे; मैं निहोरूँ तुझे न सताया ॥ आया० ॥
गुरु मुख चन्द को सदा जोऊँ; कभी विलग न उनसे होऊँ;
गुरु पूज्य मेरे; मैं पुजारी तेरे गुरु मेरा सदा सहाया ॥ आया० ॥
गुरु वशिष्ट कुल पूज्य हमारे। इनकी कृपा दनुज रन मारे ॥

हे भक्त राज ! आपकी परम वात्सल्यमयी गोद में लाड़ प्यार से मुझे जो महान सुख मिलता है वह कहीं भी नहीं मिलता; इसलिये इस अनुपम सुख को सर्वदा आप प्रदान करते रहें; यह मेरी भी कोमल कमनीय कामना है।

"अहं प्राणश्च भक्तानां भक्ताः प्राण ममापि च।
ध्यायते ते च मां नित्यं स्मरामि दिवा नाशम् ॥
ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानु वर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः" ॥
मत्कृतं बाल भावेन चापराधं च तत्क्षमम्।
यत्सुखं न कृतं तात पित्रोश्च नृप मन्दिरे ॥
कृतं सुख च स्वर्गादपि सुदुर्लभम्।
मदीयं प्रिय वाक्यं च प्रह्वत्वं विनयं नयम् ॥

मन को सान्त्वना

तोहिं राम मिलेंगे; कपट के पट खोल रे।
घट घट में वो स्वामी रमता; कटुक बचन मत बोल रे। तोहि०
धन योवन का गर्व न करियो; झूठा पचरँग चोल रे॥ तोहि०
सून्य महल में दियना बारो; आज्ञा से मत डोल रे। तोहि०
श्री गुरु परम सुख पावत; राम खेलें जे के कोल रे (गोद)॥ तोहि०

भजन

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ।
जाही विधि राखै राम, ताही विधि रहिये ॥
मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में ।
तू अकेला नाहीं प्यारे, राम तेरे साथ में ॥
विधि का विधान जान, हानि, लाभ सहिये । जाही विधि०
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ॥
किया अभिमान तो फिर मान न पायेगा ।
होगा प्यारे वही जो श्री राम जी को भायेगा ॥
फल आशा त्याग, शुभ काम करते रहिये । जाही विधि०
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ॥
जिन्दगी की डोर सौंप, हाथ दीनानाथ के ।
महलों में राखे, चाहे झोपड़ी में बास दे ॥
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये ॥ जाही विधि०
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ॥
आशा एक राम जी से, दूजी आशा छोड़ दे ।
नाता एक राम जी से, दूजे नाता तोड़ दे ॥
साधू संग, राम रंग अंग अंग रँगिये ।
काम रस त्याग प्यारे, राम रस पगिये ॥ जाही विधि०
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ।
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये ॥

न धर्म निष्ठोऽस्मि न चात्म वेदो न भक्ति मांस्त्वच्चरणारविन्दे ।
अकिंचनोनान्यगतिः शरण्यं त्वद्पादमूलं शरणं प्रपद्ये ॥

यथार्थ में—गुरुं गुरुणां त्वं देवं पितृणां त्वं पितामह
अन्तर्यामी जगज्जाता वाह कष्तमगोचरम
जगत्गुरुश्चशास्वतं तुरीयमेव केवलम् ।

ॐ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॐ

* भूमिका *

कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानाम् ।
पाथेयं यन्मुमुक्षोः सपदि परपद प्राप्तये प्रस्थितस्य ॥
विश्रामस्थानमेकं कविवर वचसां जीवनं सज्जनानाम् ।
बीजं धर्म द्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम ॥१॥
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमल प्रध्वंसनं चाव्ययम् ।
श्रीमच्छम्भु मुखेन्दु सुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ॥
संसारामय भेषजं सुखकरं श्री जानकी जीवनम् ।
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥२॥

एक समय की बात है कि जगत्कल्याणकर्ता भगवान् शिवशंकर कैलाश पर्वत पर सुखासीन हैं। देखिये —

बैठे सोह कामारिपु कैसे। धरे शरीर शान्तरस जैसे ॥
पार्वती भल अवसर जानी। गयी शम्भु पहं मातु भवानी ॥
जानि प्रिया आदर अति कीन्हा। बाम भाग आसन हर दीन्हा ॥
पति हिय हेतु अधिक अनुमानी। बिहंसि उमा बोली मृदु बानी ॥
कथा जो सकल लोक हितकारी। सोइ पूंछन चह शैलकुमारी ॥

नाथ मैं कुछ पूछना चाहती हूँ, आज्ञा हो तो मैं प्रार्थना करूँ। भगवान् शंकर बोले—आप आनन्द पूर्वक पूछ सकती हैं। इस पर पार्वती बोलीं—नाथ! आप 'कुन्द इन्दु सम गौर शरीरा' होते हुए आप इतने सुन्दर और गौर शरीर में विभूति भस्म क्यों लपेटे रहते हैं? आपने मनुष्यों की मुण्डमाला अपने दिव्य एवं मङ्गलमय शरीर में क्यों धारण कर लिया है? इसका विशेष कारण क्या है? इस पर शंकर भगवान् बोले—यह सब तुम्हारी ही मुण्डमाला है। जब तुम मर जाती हो तब तुम्हारे शरीर को मैं जला देता हूँ और उसी की विभूति (राखा) मैं अपने शरीर में लगा लेता हूँ। तुम्हारे ही जले शव की विभूति लगाता हूँ और मुण्डों की माला धारण करता हूँ। क्योंकि तुमसे मेरा आन्तरिक और सूक्ष्म प्रेम है। इस पर पार्वती बोलीं—यह माला तो लाखों की संख्या में है। शंकर भगवान् बोले—लाखों से भी अधिक संख्या होगी। जो जीर्ण-शीर्ण हो जाता है उसे फेंक भी देता हूँ। पार्वती ने ऐसा कहने पर प्रश्न किया—मैं इतनी बार मर गयी, आप क्यों नहीं मरते? इस पर भगवान् शंकर बोले—हमारे पास अमर मन्त्र है। इनके ऐसे उत्तर पर

पार्वती बोलीं—मैं आपकी प्रिया हूँ फिर आपने मुझे यह अमर मन्त्र क्यों नहीं बताया ? भगवान शंकर ने इसका उत्तर दिया—यह परम गोपनीय और अदेय वस्तु है। देखिए—

राज्यं देयं श्रियो देयं देयं स्त्रीपुत्रकं प्रिये।
आत्म तुल्यधनं देयं न देयं राम तत्त्वकम् ॥

पार्वती बोलीं-यह अमर मन्त्र मुझे अवश्य दीजिए। यह हठ कर लिया। भगवान् शंकर ने यह विचारा कि यह कहना ही पड़ेगा।

तब देखे शंकर धरि ध्याना।

यहाँ कोई है तो नहीं तो अपने त्रिशूल के तेज से स्थान को निर्जन कर दिया। अमर कथा कहते-कहते कुछ समय व्यतीत हो गया।

यहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥

इसी में राम नाम की महिमा नाना दृष्टान्तों द्राष्टान्तों में कह रहे हैं। दृष्टान्त द्वारा कहते हुए बहुत समय हो गया तो पार्वती जी को नींद आ गयी तो हामी भरना बन्द हो गया। जिस समय भगवान शंकर ने स्थान को निर्जन किया तो एक वृक्ष के कोटर में अचेतन शुक का अण्ड (अण्डा) पड़ा था वह अमर मन्त्र सुनकर के चेतन हो करके अमर हो गया। वह हामी भरने लगा। बहुत समय कथा कहते हुए महादेव जी ने पार्वती जी से पूछा-प्रिये ! अमर कथा सुनी ? पार्वती बोलीं-नाथ ! मुझे नींद आ गयी जिससे पूरी कथा न सुन सकी। इस पर शंकर ने पूछा तब हामी कौन भर रहा था ? पार्वती बोलीं मुझे इसका पता नहीं। 'शंकर देखेउ धर ध्याना'। से मालूम हुआ-वृक्ष के कोठर में अण्ड (अण्डा) से चेतन होकर एक शुक बैठा हुआ है। शंकर बोले-इसने मेरी अवज्ञा की ऐसा सोचकर शंकर जी क्रोधित होकर त्रिशूल लेकर उसे मारने के लिए दौड़े। शुक भगा। वह अमर तो हो ही गया है। अब उसको मार ही कौन सकता है ? भागते-भागते वह ब्रह्मलोक पहुंच गया। जिस समय व्यास जी की स्त्री स्नान करके सूर्य से आशीर्वाद की प्रार्थना कर रही थीं। उसी समय वह शुक उनके अञ्चल (आंचल) में कूद पड़ा। उन्होंने विचार किया-प्रकाशमय सूर्य ने मुझे कुछ दिया है। वह अपना अञ्चल ढक ली। वह अञ्चल खोल कर देखना चाहीं—उसी समय उन्हें जमुहाई आई और शुक मुख में प्रविष्ट हो गया और इससे व्यास जी की पत्नी को बहुत आनन्द लगा। उसी समय भगवान शंकर शुक का पीछा करते हुए व्यास के वहां पहुँचे और व्यास जी से बोले-तुम्हारे घर में तुम्हारी

स्त्री ने हमारी एक वस्तु चुरा ली है उसको हम मारेंगे। इस पर व्यास जी बोले-'स्त्री अवध्य होती हैं' उसको आप मार नहीं सकते। व्यास जी और भगवान शंकर का शास्त्रार्थ हुआ। शंकर व्यास जी से परास्त होकर कैलाश चले गये। व्यास जी आश्रम में जाकर अपनी पत्नी से पूछते हैं—तुम्हें क्या कुछ मिला है? व्यास की पत्नी इस पर बोली—नाथ! मेरे मुख में एक प्रकाश सी वस्तु प्रविष्ट हो गयी है और उससे मुझे बहुत प्रसन्नता और शान्ति मिल रही है। वह क्या है? मुझे इसका पता नहीं है। व्यास जी ने ध्यान से देखा—तुम्हारे गर्भ में बहुत बड़ा एक राम भक्त आया है। इसकी सब प्रकार से रक्षा करना। ऐसा कह कर व्यास जी चले गये। सन्ध्या आयी। रात्रि हो गयी। शुक जिनका नाम आगे शुकदेव होगा। उनके पास अष्ट सिद्धियां तो थी हीं। रात्रि समय वायु रूप होकर के भारतवर्ष में आज माताओं में जितने गर्भाधान हुए हैं सभी गर्भों में जा जा प्रवेश करके उन्होंने कह दिया। भैय्या देखो—

बाहर में भगवान की बड़ी बलवती माया है। वह पकड़ लेगी। हम भक्तों को अपने उद्धार मार्ग को साफ करने के लिए कुछ नहीं मिलेगा। इससे तो भले ही गर्भ स्थान दुर्गन्ध ही है किन्तु एकान्त है। यहां अपर मन्त्र भजन करने का पूरा सावकाश है। उस दिन भारत में अट्ठासी हजार गर्भ-धारण हुआ था। उन सबको पैदा होने से मना कर दिया गया। वे सब गर्भ में ही रह कर भजन करने लग गये। श्रीमद्भागवत में तो है कि बारह वर्ष गर्भ में रहे। अन्यत्र ज्यादा भी है। बारह वर्षों में माताओं के गर्भ तो बहुत विशाल हो गये और माताओं को कष्ट होने लगा। इससे ब्रह्मलोक में हाहाकार मच गया। तब ब्रह्मा जी विष्णु भगवान के पास जाकर बोले—आपका एक शुक नाम का भक्त जो व्यास जी की स्त्री के गर्भ में है। वे अट्ठासी हजार गर्भ रोक रक्खे हैं। आप पधारें। भक्त को समझा कर गर्भ से अलग करें तब विष्णु भगवान गर्भ में आये और कहे--आप अट्ठासी हजार सहित गर्भ छोड़ दें। इस पर शुक ने कहा--आपकी बलवती माया बाहर में है गर्भ से बाहर निकलते ही वह पकड़ लेगी और मुझे माया मे डाल देगी। यदि आप मुझको गर्भ से बाहर निकलने को आज्ञा दे रहे हैं तो आप अपनी माया को एक घंटा के लिये सूर्य निकलने से पहले रोक रक्खे। भगवान तथास्तु कह कर अन्तर्ध्यान हो गये। शुक ने अठासी हजार गर्भों में जाकर उनसे कह दिया-सबेरे सूर्योदय से पहले एक घंटा का समय है उसी समय तुम लोग गर्भों से

निकल जाओ, भाग जाओ और उत्तराखंड हिमालय की कन्दराओं में घुस जाओ वे ही अट्ठासी हजार ऋषि कहे जाते हैं। वे ही अट्ठासी हजार ऋषि अमर हैं।

अद्यावधि सूत शौनक द्वारा अट्ठासी हजार ऋषियों के सहित आज तक अमर मंत्र रामनाम के परत्व का वर्णन हो रहा है। वही है अमर मंत्र रामनाम। देखिए मानस में –"नाम प्रभाव शम्भु अविनासी" और हनुमान जी के रोम-रोम में रामनाम का उच्चारण हो रहा है। वे भी इसी से अमर हैं। जिन लोगों ने रामनाम का आश्रय लिया वे ही अमरत्व को प्राप्त हो गये।

अतः इसी रामनाम परत्व को माधुर्योपासक सम्प्रदायाचार्य अनंत श्री-विभूषित श्रीयुगलानन्य शरणजी महाराज ने नाना पुराण निगमागमों तदुपबृंहित ग्रंथों से रामनाम का तत्वार्थ संग्रहीत करके 'श्री रामनाम प्रताप प्रकाश' को प्रकाशित किया जिसमें रामनाम का परत्व, उसकी महिमा तथा प्रभाव शक्ति का अद्भुत वर्णन हुआ है जिसमें कलि प्रभावित जीवों की उद्धार शक्ति अद्भुत परिलक्षित होती है आचार्य श्री ने इसके प्रकाशन से जीव जगत, और वैष्णव जगत का अपूर्व कल्याण किया है।

श्रीरामनाम प्रताप प्रकाश लघुकाय ग्रंथ अत्यंत प्राचीन है, इसलिये इसके प्रकाशन की तिथि का ज्ञान नहीं होता। किन्तु वर्षों पूर्व पं० श्रीमैथिली शरण शास्त्री वेदान्ताचार्य जी ने इसका प्रकाशन जगत् कल्याणार्थ कराया था। यह अद्भुत कृति समाप्त हो चुकी थी और भक्त जगत् में इसकी मांग बराबर रही। इसका अभाव "श्रीरामनाम प्रताप प्रकाश" प्रेमियों को खटकने लगा और उनके निरन्तर अनुरोध से इसके पुनः प्रकाशन के लिए मैंने अनन्त श्रीविभूषित पं० स्वामी श्री सीतारामशरणजी महाराज लक्ष्मणकिलाधीश से प्रार्थना की और उन्होंने बड़ी उदारता से इसके प्रकाशन के लिए मुझे अनुमति दे दी। एतदर्थ मैं इनका अत्यन्त आभारी हूँ। इनकी सम्मति भी ग्रन्थ के प्रारम्भ में प्रकाशित है इन्होंने ऐसी अनुमति प्रदान करके भक्त जगत का बड़ा उपकार किया है। इन्होंने अपनी कथा के माध्यम से भक्त जगत का मधुर वाणी और विद्वता से अद्वितीय उपकार किया है।

जिस समय श्रीरामनाम प्रताप प्रकाश के प्रकाशन के लिए मैंने सोचा उसी समय हमारे एक शिष्य श्री रामचन्द्र साह आये हुए थे। उन्होंने इस कार्य के लिए सहर्ष प्रकाशन व्यय स्वीकार कर लिया। यह ग्रन्थ सन्तों की सेवा के हेतु मैं प्रकाशित करने जा रहा हूँ, इसमें मेरा कोई स्वार्थ नहीं है। केवल सन्तों के शुभाशीर्वाद की कामना है। इसका मूल्य भी केवल सप्रेम पाठ ही

है। श्री सीताराम भक्त समुदाय इसका पठन–पाठन करके अपनी प्रेमाञ्जलि श्री सीताराम जी के चरणारविन्द में समर्पित करें और मुझे इसके लिए आशीर्वाद दें। इसके प्रकाशन के लिए श्री रामशिरोमणि शाह व गुलाबदास शाह ने जो श्री सीताराम जी के अनन्य भक्त हैं, खर्चा वहन किया है। इनको मैं तो शुभाशीर्वाद देता ही हूँ आप सब भी शुभाशीर्वाद दें। जिससे गुरु में और भगवान् में श्रद्धा हो, प्रेम हो। यह, पुत्र परिवार, धन तथा ऐश्वर्य से सम्पन्न हों।

श्रीरामनामाखिल मन्त्रबीजं सञ्जीवनं चेद् हृदये प्रविष्टम्।
हलाहलं वा प्रलयानलं वा मृत्योर्मुखं वा विशतां कुतोभीः॥

— गंगादास

श्री जगन्नाथ पुरीस्थ छोटा छत्ता के श्री महान्त स्वामी श्री गङ्गादास जी महाराज के परम कृपापात्र श्रीरामशिरोमणि साह, गुलाबदास साह जी रसिकाचार्य स्वामी श्री युगलानन्य शरणजी महाराजद्वारा संग्रहीत श्रीसीताराम नाम प्रताप प्रकाश का प्रकाशन कर निःशुल्क वितरण करने जा रहे हैं यह जानकर प्रसन्नता हुई प्रभु से प्रार्थना है कि प्रकाशक की गुरु भक्ति तथा श्री राम भक्ति की ओर निरन्तर प्रवृत्ति हो। **स्वामी सीतारामशरण**

श्रीलक्ष्मण किलाधीश, अयोध्या

८-४-८२
चैत पूर्णिमा २०३९

—*—

"श्री रामनामाखिल मन्त्र बीजम्"

श्री रामनाम सभी मन्त्रों का कारण है। वेद का सार गायत्री, गायत्री का सार ओंकार एवं कारण श्री रामनाम है।

रामनाम्नः समुत्पन्नः प्रणवो मोक्षदायकः।"

कलिमल ग्रसित जीवों के लिए श्री रामनाम को छोड़कर दूसरा अवलम्बन नहीं है।

जाने बिन न होय परतीती। बिन परतीति होय नहिं प्रीती।

इस सिद्धान्त से नाम माहात्म्य जानना अत्यावश्यक है।

नाम निरूपण नाम जतन ते। सोउ प्रगटत जिमिमोल रतन ते।

श्री महाराज जी नाम महाराज के जौहरी हैं। जौहरी ही सही मूल्यांकन कर सकता है मणि माणिक्य का। जैसे कि श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है—

तुलसी जिनके मुखन ते, धोखेहु निकसत राम।
तिनके पग की पानही, मेरे तन को चाम॥

ग्रन्थ प्रकाशन से लोक का महान उपकार होगा।

महान्त नृत्यगोपाल दास

श्री मणिरामदासजी की छावनी अयोध्याजी

पुस्तक की छपाई का खर्चा बहन करने वाले आज्ञाकारी शिष्य

श्री गुरू जो के समक्ष धर्म उपदेश सुनते हुए बायें से श्री राम शिरोमणि जो, दायें से श्री गुलाब दास जी इन्हीं परम भाग्य शाली द्वारा श्री राम भक्त सन्तों को समर्पित है।

विनीत :—

महन्त श्री गंगा दास जी महाराज

छोटा छुत्ता मठपुरो (श्री जगन्नाथ धाम)

* श्री सीताराम नाम प्रताप प्रकाश *

अनन्त श्री विभूषित प्रातः स्मरणीय वन्दनीय श्री राम नामैक जीवन वैष्णव कुल भूषण श्री गङ्गादास जी महाराज छोटा छत्ता जगन्नाथ धाम श्रीरामानन्द सम्प्रदाय की बन्दनीय विभूतियों में विशिष्टतम सन्त हैं जिनका समस्त जीवन बाल्य-काल से श्रीरामनाम जप, कीर्तन, कथा और पाठ में बीत रहा है। इन्होंने मानस की टीका हिन्दी में बात्सल्य भाव से की है जो अपने में अद्वितीय है। इतना ही नहीं इन्होंने उड़िया भाषा में समस्त मानस का उलथा कर दिया है। इसलिए ये उड़ीसा में गोस्वामी तुलसीदास जी के रूप में उड़िया भाषा में माने जाते हैं। इन्होंने सम्पूर्ण भारत में श्री रामनाम का अमित प्रभाव अपनी वाणी और लेखनी से फैलाया है। ये श्री रामलीला और श्री कृष्ण लीला के आनन्द प्रेमी हैं। ये अन्तः साधना और बहिः सधाना के पारदर्शी साधक हैं। इनके जीवन का एक त्तण भी प्रभु श्री राम की चर्चा और लीला के बिना नहीं बीत रहा है चाहे वहमुखर हो या उपांशु। दूर से देखते इनकी आकृति और वाणी से श्रीराम नाम की प्रभा मन्दाकिनी अविरल रूप से प्रवाहित होती हुई जनमानस को अपनी ओर हठात् आकृष्ट कर लेती है। इनके व्यक्तित्व और साधना में अद्भुत आकर्षण और प्रभाव है जो नास्तिक को भी आस्तिक के रूप में जीवन व्यतीत करने के लिये विवश कर देता है।

श्रीरामनाम सम्बन्धी अनेक छोटे बड़े ग्रन्थों के प्रकाशन के बाद इनकी दृष्टि श्रीसीताराम नामप्रताप प्रकाश पर पड़ी जो ग्रन्थ भक्त जगत के लिए लगभग दो दशकों से दुर्लभ हो गया था और भक्त जगत में जिसकी बहुत ही मांग थी। इसके प्रकाशन से भक्त जगत का अति कल्याण होगा। यह श्री महाराज जी की भक्त जगत पर निर्हेतुकी कृपा है। इनके समस्त ग्रन्थों का मूल्य सप्रेम पाठ ही है। श्रीराम साहित्य के प्रकाशनार्थ ही इनका भौतिक जीवन है। ये तो श्री राम नाम की अखण्ड साधना से कृत कार्य हैं।

म० प्रभुदास आचार्य
पलटूदास जी अखाड़ा, अयोध्या।

—०※०—

श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः

पुरीस्थ श्री स्वामी महान्त गङ्गादास जी महाराज श्री सीताराम नाम प्रताप प्रकाश नामक ग्रन्थ नूतन सम्पन्न करने जा रहे हैं, यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई। भक्त जन समुदाय को बहुत कल्याणकारी होगा।

यथा—सर्वेऽर्थाः वेद गर्भस्था वेदाश्चाक्षरे स्थितः।
अष्टाक्षरश्च प्रणवेऽकारे प्रणवस्थितिः॥
यथैव वटबीजस्थः प्राकृतश्च महाद्रुमः।
तथैव राम बीजस्थं जगदेतच्चराचरम्॥

प्रधानाचार्य
श्री रामकिंकर दास

—०※०—

कोशलेन्द्र पद कञ्ज मञ्जुलौ,
कोमलावज महेश बन्दितौ ।
जानकी कर सरोजलालितौ
चिन्तकस्य मन भृङ्गसङ्गिनौ ॥

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
सीताराम सीताराम कहो मन सीताराम ।
भ्रमत भ्रमत बहु काल तोहे बीत गये
अजहुँ तनिक घर चेत मन सीताराम ॥
करुणानिधान उपकारी बिनहेत प्रभू
नर तन कृपा कर दीन मन सीताराम ।
कौशिला कुमार सिया संगे गले बांहे दिये
मृदु मुस्कान मन आनमन सीताराम ॥
माया मोह जग जाल साथी दिन पाँच चारि
तिनहिं विहाय प्रभु भज मन सीताराम ।
पाई जग मोह जाल प्रभू का मिलन हेतु
धीरे धीरे ताहि मन मेट मन सीताराम ॥
जनक लड़ौती छवि खानि स्वामिनी जी सिया
तिनहिं रिझाय मतिमान मन सीताराम ।
प्रेम लाय गंगादास सीताराम डोरी गहि नेहकी
नगरी चल बसु मन सीताराम ॥
सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
सीताराम सीताराम कहो मन सीताराम ।

अगर है ज्ञानको पाना
तो गुरुकी जा शरण भाई ॥टेक। अगर है०
जटा सिरपे रखाने से भस्म तनमें रमानेसे
सदा फलमूल खानेसे कभी नहि मुक्तिको पाई
बने मूरत पुजारी है तीरथ यात्रा पियारी है
करे व्रतनेम भारी है भरम मनका मिटे नाही ॥२॥
कोटि सूरज शशी तारा करें परकाश मिल सारा
बिना गुरु घोर अंधारा न प्रभुका रूप दरसाई ॥३॥
ईश सम जान गुरु देवा लगा तनमन करो सेवा
ब्रह्मानन्द मोक्ष पद मेवा मिले भवबन्ध कटजाई ॥४॥

—:०००:—

बिना हरिनाम के सुमरे गति नहि होयगी तेरी ॥टेक०॥
लगाले भस्म इस तनमें करो तप जाके वा बनमें
समझले खूब यह मन में मिटे नहि जन्म की फेरी ॥१॥
फिरो मथुरा वा काशी है सदा तीर्थ निवासी है
रहो सब से उदासी है छुटे नहि आश मन केरी ॥२॥
करो व्रत नेम अरुदाना फिरो जंगल में मस्ताना
जो प्रभु का रूप नहि जाना जले नहि कर्म की ढेरी ॥३॥
जपो हरिनाम सुखकारी झूठ दुनियां की है यारी
ब्रह्मानन्द काल बलकारी करो मत भूल कर देरी ॥४

श्रीसीतारामाभ्यां नमः
श्रीगुरवे नमः

श्रीसीताराम नामप्रताप प्रकाश

मङ्गलाचरण

श्रीहनुमन्नाटके श्रीमहावीरवाक्यं रामनामानन्यभक्तान् प्रति—

कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानां
पाथेयं यन्मुमुक्षोस्सपदि परपदप्राप्तये प्रस्थितस्य।
विश्रामस्थानमेकं कविवरवचसां जीवनं सज्जनानाम्
बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम॥१॥

टीकाकार का मङ्गलाचरण

दोहा—श्रीसतगुरुहिं प्रनाम करि पावन परम पराग।
बंदि विमल बर बोध सुख निर्विरोध हित राग॥१॥
श्रीकरुनाकर कृपिनजन पालकपन निर्हेतु।
बन्दों सतगुरु बार बहु भवनिधि दुस्तर सेतु॥२॥
श्रीमारुतनन्दन शिवा सहित शंभु सुख कन्द।
सुमिरों सियपिय प्रेमप्रद हरन अखिल अघ द्वन्द॥३॥
श्रीगौरीशसुवन सरस सदन सुमति गुनऐन।
मंगलकरन सुचरन नित नमो मथन मदमैन॥४॥
श्रीबानी सियराम गुन कलित कला लयलीन।
वीना पुस्तक कंजकर प्रनमों सुपद प्रवीन॥५॥
चहुँयुग माहिं सुसंत जे रसिक नाम अभिराम।
तिन पदपंकज नमो नित दायक उर अभिराम॥६॥
पर ते पर पावन परम अगजग जीवन जान।
बन्दों सीताराम निज नाम महामुद खान॥७॥
रूप धाम लीला सुगुन कारन नाम उदार।
नमो नमो नित नेह युत अद्भुत रँग रससार॥८॥

युगलकिशोर स्वरूप सन अति अभेद सब भांति ।
सुमिरों हर हनुमान हिय दायक नित नव कांति ॥९॥
अगुन सगुन वर बोध कर अमर अजर सुखहेतु ।
करुनानिधि आरत हरन भवदुस्तर सुचि सेतु ॥१०॥
नामप्रतापप्रकास रस रास स्वास अभिलास ।
पूरक प्रेम सुवास उर प्रगटावन अनयास ॥११॥
अमित ग्रंथ सतपन्थ प्रिय सुचि संग्रह सुखसार ।
तासु विमल वर वार्त्तिक बरनों मति अनुसार ॥१२॥
अवध अनूपम देश भल भाषा परम पुनीत ।
तेहि युत बिरचों सुलभतर दायक परम प्रतीत ॥१३॥
टीका अति नीका रुचिर नाम ललित सुखधाम ।
"नामपरत्वप्रकाशिका" सुनत होत विश्राम ॥१४॥
श्रीसरयू तट लखन कल कोट बीच हरषाय ।
प्रभुप्रेरित टीका करौं बरधनि मोद निकाय ॥१५॥
जो नर पढ़िहैं प्रेमयुत सुनि गुनि सजि विश्वास ।
ते पैहैं सियाराम पद परम रहस रस रास ॥१६॥
यद्यपि मैं मतिमन्द अति विषयी बलित विकार ।
तद्यपि नाम सनेह सुचि सत सम्बन्ध अधार ॥१७॥
ज्ञान योग वैराग्य रति रती नहीं मो मांह ।
पै श्रीनाम कृपालु सुरतरु सन्तत सिर छांह ॥१८॥
ग्रन्थ मनोहर मोदप्रद सुनिय प्रबन्ध विचित्र ।
दश प्रमोद यामें मधुर कारक प्रेम पवित्र ॥१९॥
प्रथम पुरान प्रमान पुनि उपपुरान सुख खानि ।
शुचि संहिता प्रमान तिमि नाटक स्मृति प्रमानि ॥२०॥
छवां रहस्य प्रमान लखु सप्तम जामल जानु ।

अष्टम तन्त्र उपासना ग्रन्थ प्रमान प्रधानु ॥२१॥
श्रीमद्रामायन नवम दशम वेद जिय जानु ।
दस प्रमोद यामधि बिदित समुझो सन्त सुजान ॥२२॥
आदि अन्त लगि नेह जुत जो बिलोकिहैं सन्त ।
सो पावेंगे नामरस सुधा स्वादु छबिवन्त ॥२३॥
युगलानन्यशरन सदा यांचत युग कर जोरि ।
सकल सन्त मिलि दीजिये नाम रटन दृढ़ डोरि ॥२४॥

[बार्त्तिक भाषा में समस्त श्लोकन का अर्थ यथार्थ निरूपन करत हौं, सब नाम रसिकन को पढ़ि सुनि के सुख होयगा। संस्कृत टीका से सब सनेहिन को बोध नहीं होता है। श्रीनाम-प्रतापप्रकाश के आदि में परम उपासकवर्य्य आचार्य शिरोमनि नामानुरागिन में अग्रगन्य श्रीरामानन्दप्रदायक श्रीमहावीर समीर सुवन कृत श्लोक शोकसमनार्थ मंगलाचरन में राख्यो है, जाते श्रीहनुमानजू के कृपा कटाक्ष ते ग्रन्थ विघ्नध्वंसन तथा रसिक नामानुरागिन के सभा में प्रचुर होनो औ श्रीनाम अभिराम को अनूप अर्थ चित्त में प्रकाश होना, इत्यादि अनेक अभिलाष पूरणार्थ मंगलाचरण में धर्यो है। मंगल तीन प्रकार के होत हैं। वस्तुनिर्देशात्मक, नमस्कारात्मक, आशीर्वादात्मक। या श्लोक में आशीर्वादात्मक मंगलाचरण है। श्रीमहावीर जू को बचन रस रचन तो महागंभीर अथाह है, परन्तु मैं तिनकी दई मति अनुसार कछुक अर्थ लिखत हौं। श्रीहनुमानजू समस्त रामनामरसिकन को आशीस देते हैं।] श्रीरामनाम महाअभिराम नामानुरागिन को परम ऐश्वर्य्य एक रस देने में सदा समर्थ होय। इहां ऐश्वर्य श्रीसीताराम नाम स्वरूपादि सुख समझना चाहिये। अनिमादिक विभूति सब तुच्छ नश्वर हैं। कैसे हैं श्री राम नाम सो सुनो, सब विशेषन श्रीरामनाम का है। समस्त कल्यानन के दिव्य

निवास स्थान हैं। कल्लानप्रद करिके ज्ञान वैराग्यादिक समस्त शुभ साधन साध्य समेत समझना। पुनि कैसे हैं? कलियुग के पाप ताप को नास करने हारे हैं, पावन जो श्रीगङ्गादिकन तीर्थ धाम तिनको पवित्र करने हारे हैं। पुनः कैसे हैं? मुक्ति जो परम-धाम तिनको प्राप्ति की इच्छा वालन को शीघ्रतर परमपद प्राप्ति निमित्त परम पुष्ट सुष्ट राह खरच हैं परन्तु दृढ़ होयके यात्रा किये होय। पुनि कैसे हैं श्रीरामनाम? कवि जो वाल्मीकादिक तथा समस्त वक्तन के वचनोत्तम को विश्राम देने को विशद धाम हैं। अभिप्राय इह कि बिना श्रीनामावलंब किये काहू को विश्राम नहीं। पुनि कैसे हैं श्रीरामनाम? सब सज्जनन को परम जीवन हैं। अभिप्राय इह के बिना नाम जपे सब सज्जन विवेकी अपनेको मृतक मानते हैं। जीवन सांचो तबहीं है जब नाम रटन होय। पुनि कैसे हैं श्रीरामनाम? समस्त सामान्य विशेष धर्मन को बीज है, कहिये कारन है। कारन दो प्रकार के होत हैं उपादान, निमित्त जैसे घट को मृत्तिका, निमित्त कुलाल है। ऐसे ही श्रीरामनाम सब धर्ममय हैं औ सब धर्म के कर्ता भी हैं। सर्वोपरि परत्व श्री रामनाम का है, भजन सत्संग में समुझि पड़ेगी धीरे धीरे। प्रथम श्लोक का अर्थ समाप्त भयो॥ १॥

महाशंभुसंहितायां श्रीशिववाक्य श्रीरामभक्तान् प्रति—

मुक्तिस्त्रीकर्णपूरौ मुनिहृदयवयः पक्षती तीरभूमौ
संसारापारसिंधोः कलिकलुषतमस्तोमसोमार्कबिम्बौ
उन्मीलत्पुण्यपुञ्जद्रुमललितदले लोचने च श्रुतीनां
कामं रामेतिवर्णौ शमिह कलयतां सन्तं सज्जनानाम्॥२

द्वितीय श्लोक शोक विनाशन श्रीमहाशंभु संहिता का है। श्रीशंकरजू श्रीरामानुरागिन में श्रेष्ठ हैं सो सब नामरसिक सज्ज-

ननको आशीस देते हैं। श्रीरामनाम दोऊ बरन स्वच्छन्द सदा महामंगल यथा अभिलाष सब नामानुरागिन को देवें, इह मेरी आशीस है कैसे हैं श्रीरामनाम दोऊ बरन सो सुनो। मुक्तिरूपा सुन्दरी के करनके फूल हैं। नारिन के सौभाग्य का सूचक ताटंक होत है अभिप्राय इह है के बिना नाम सम्बन्ध के मुक्ति भी विधवा सदृश अशोभित है, ताते सकल भाँति नाम रटनो उचित है। पुनि कैसे हैं दोऊ बरन? महामुनिन को हृदय सोई विहंग है ताके सामर्थ्य देनेको दो पच्छ हैं अभिप्राय इह है के श्रीनाम बिना परमेश्वर पद रूप आकाश मेंमुनि हू नहीं जासकते औरन की कहा कथा है। पुनि दोऊ बरन कैसे हैं? संसार रूप अपार सागर के दोनों किनारे हैं। अभिप्राय इह है के जब दोऊ बरन उच्चारन कियो तब भवसागर के पार भयो। कलियुग को महापाप सोई महातम ताप समूह ताके नासने अर्थ महासूर्य चन्द्रमा रूप हैं। पुनि कैसे हैं? प्रकाशित जो सुकृत रूप बृच्छ तिसके दो दल हैं। अभिप्राय इह है के बिना नाम उच्चारन के सुकृत स्वरूप असम्भव है प्रथम दो दल बृच्छ में होत हैं। समस्त श्रुतिन के दोऊ बरन नेत्र हैं। अभिप्राय इह के श्रीरामनाम अवलम्ब से वेद सब कुछ देखत हैं नाम बिना अन्ध सम हैं। जब वेदन की इह गति है तब पढ़नहारन की कौन कथां कहै, ताते नाम ही रटो॥२॥

पद्मपुराणे श्रीशिववाक्य पार्वती प्रति

नामचिन्तामणि रामश्चतन्यचरविग्रहः।
पूर्णःशुद्धो नित्ययुक्तो न भिन्नोनामनामिनः॥३॥

श्रीव्यासजी का बचन है पद्मपुरान में–श्रीरामनाम सच्चिदानन्द स्वरूप चिंतामनि महाप्रकाशमान समस्त, चिन्ताहारी हैं। चराचर भेव व साधन साध्यमें पूरन है, अविनाशी हैं। नामी से

परम अभेद है, परम निर्मल है ॥३॥

अतः श्री रामनामादि न भवेद् ग्राह्यमिन्द्रियैः।
स्फुरति स्वयमेवैतज्जिह्वादौ श्रवणे मुखे ॥४॥

श्रीरामनाम रूप गुनादि मन इन्द्रिन से अगोचर है। अपनी कृपा निर्हेतुकी से रसना, श्रवन, मुख, हृदय, कण्ठादिक स्थानन में आप ही प्रगट होते हैं। प्राकृत चिन्तामनि जड़ अशुद्ध बिनास-मान नाम नामी से भेद है। जो कुतर्की नीच तर्क करे के आग के कहे, चीनी के कहे, मुंह नहीं जलता है, मीठा नहीं होता है तैसे ही रामनाम के कहे जीव कृतारथ न होयगा? सो यह कहना असम्भव है काहे ते के श्रीरामनाम अप्राकृत परमेश्वर है तिनके साथ संसारी पदार्थ की समता बनि नहिं सकती और प्रमान भी कहीं नहीं कि आग के कहे मुख जल जाय। औ श्रीरामनाम के कहे महापापी तरि जाते हैं इनमें अनन्त प्रमान हैं ताते उनका कुतर्क महामलीन है। ऐसों का संग न करना ॥४॥

रामरामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥५॥

श्रीमहादेवजू पार्वतीजी से कहते हैं—एक बार श्री शंकर प्रसाद पावने लगे तब प्रेम से प्रानप्रिया को कहत भये के मेरे साथ आय के भोजन पा जावो, तब पार्वतीजी ने कहा के हरि-सहस्र नाम के पाठ का नियम है, बिना पाठ किये न पावेंगी, यह वचन सुनि के श्रीशंकरजू प्रसन्न भये। अपना मुख्य सिद्धान्त प्रिया से कहते हैं। हे वरानने! श्रेष्ठ मुखवाली!! श्रीरामनाम हजारों नाम के सम हैं, औ मन को रमावने वाले हैं औ हम सदा श्रीरामनाम में रमन करते हैं, औ हमारे श्रीरामनाम ही धन हैं, औ श्रीराम-नाम माया से परे हैं ऐसे श्रीरामनाम को कहिके मेरे साथ भोजन

पावो। तब श्रीपार्वती ने संग स्नेह समेत भोजन पाया, श्रीशंकर जू ने अंग लगाय लिया इह कथा पद्मपुरान में है ॥५॥

जपतः सर्ववेदांश्च सर्वमन्त्राश्च पार्वति ।
तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते ॥६॥

हे पार्वती ! समस्त वेद, पुरान, संहिता मन्त्र, को कोटिन बार पाठ करे तिससे अनन्त गुनफल श्रीराम दोऊ बरन मनहरन के कहे होत है सत्य जानना ।६।

ये ये प्रयोगास्तन्त्रेषु तैस्तैर्यत्साध्यते फलम् ।
तत्सर्वं सिद्धयति क्षिप्रं रामनामैव कीर्तनात् ॥७॥

तन्त्रन में मारन, मोहन, उच्चाटन, आकर्षणादि नाना प्रयोग हैं, सो सब श्री रामनाम उच्चारन से शीघ्र सिद्ध होत हैं प्रीति प्रतीति चाहिये । अन्य मन्त्र में बृथा पचते हैं श्री नाम त्यागि के ।७।

भूतप्रेतपिशाचाश्च वेतालाश्चेट कादयः ।
कूष्माण्डा राक्षसा घोरा भैरवा ब्रह्मराक्षसाः ॥
श्रीरामनाम ग्रहणात पलायन्ते दिशो दश ॥८॥

भूत, प्रेत, पिशाच, भैरव, वैताल, राक्षस, कूष्माण्डादिक छोटे-बड़े भूतन के जाति हैं। महा भयानक मूरति सो सब श्रीरामनाम उच्चारन सुनि के शीघ्र ही भाग जाते हैं दशोंदिशा में, श्रीरामनाम का महाप्रताप है। श्रीराम जप में प्रेम करना उचित है सब त्यागि के। जो नाम रसरहित है तिनका संग छोड़ना चाहिये नाम सनेहिन को ।८।

प्राणप्रयाणसमये रामनामसकृत्स्मरेत् ।
स भित्त्वा मण्डलं भानोः परं धामाभिगच्छति॥९॥

श्रीपद्मपुरान का वचन है—प्रान के छूटने समय एक बार जो श्रीरामनाम स्मरन करत है काहू भाँति से। सो सूर्यमण्डल को भेदिके परमधाम में अवश्य ही नगारा बजाय के जात है चाहे जैसा पापी होय। ९॥

अर्द्धमात्रे स्थितौ श्रीमत्सीतारामौ परात्परौ।
ह्याकारेषु त्रयो देवा विन्दौ शक्तिरनुत्तमाम् ॥१०॥

आकार रहित जो रेफ आधा मात्रा है, सोई श्रीसीताराम वाच्य है, सर्वदा श्रीसीताराम से अभेद है, रेफही में श्रीसीतारामका ध्यान करना चाहिये उपासक को। विशेष करिके भिन्न निरूपन सामान्य देश है। सर्वोत्कृष्ट श्रीसीतारामनाम है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों आकार में स्थित हैं अभिप्राय इह है—रकार में जो अकार है सो वासुदेव विष्णु है, दीर्घ आकार जो रकार में है सो ब्रह्मा है। मकार को अकार श्रीमहेश है। विन्दु जो आधा मकार सो महामाया मूल प्रकृति शक्तिशिरोमनि हैं परम उत्तम है ॥१०॥

असंख्यमन्त्रनाम्नां तु बीजं शर्मास्पदं परम।
अनादृत्य महामन्दा संशक्ताश्चान्यसाधने ॥११॥

अनन्त मन्त्र नामन को बीज परम कारन सब सुख को स्थान सुधाखान श्रीरामनाम है। ऐसे परात्परेश्वर नामका अनादर करके महामन्द नीचमति वाले मूढ़तम जीव और साधनन में पचते हैं बृथा आशक्त होते हैं बिना श्रीनामपरत्व विचारे ११

जपकाले सदा देवि नामार्थञ्च परात्परम्।
चिन्तयेच्चेतसा साक्षाद् बुद्धया श्रीरामरूपकम् ॥१२

जिस समय श्रीरामनाम बाहर भीतर से उच्चारन करे। उस समय अवश्य सावधानता समेत श्रीरामनामार्थ मनन करे। जो रामनाम प्रति उज्जवलेश नामार्थ चिन्तन न हो सके तौ प्रथम

तथा मध्य में तथा जप के अन्त में भलीभाँति विचार कर लेवे सर्वोपरि श्रीरामनाम को विचारे औ साक्षात् श्रीसीताराम स्वरूप समुझि के वृत्ति लीन करे आपने स्वरूप समेत मन करनादिकन को तथा बाहर के व्यवहारन को लय करे श्रीरामनामार्थ में, तब थोरे ही दिन में महामोद विनोद प्राप्त होत है ॥ १२॥

अशनं सम्भाषणं शयनमेकान्तं खेदवर्जितम् ।
भोजनादित्रयं स्वल्पं तुरीये संस्थितिस्तदा ॥ १३॥

भोजन स्वल्प पावे, जिसमें आलस, प्रमाद, इन्द्रिन की चपलता न होय। धीरे-धीरे भूख को घटा देवे, भोजन शुद्ध करे, रजोगुनी, तमोगुनी का अन्न न पावे, सरस पदार्थन से मनको हटाये रहे लम्पट होने न देय। वचन मधुर स्वल्प सत्य हितकारी समय पायके बोले। सोचना कम करे, जहां तक बने रात्रि को जागे नाम उच्चारन ऊँचे करिके। धीरे धीरे नींद पापिनी को जीत लेवे और एकान्त ठौर में रहे जहां काहु भांति की खेद विक्षेप आपको तथा और को न होय ऐसो सुथल में वास करे। इह साधन सम्पन्न होय के जो नाम रटेंगे तिनका सुख अकथ है को कहे ॥ १३॥

संयमं सर्वदा धार्य्यं नैव त्याज्यं कदाचन ।
संयमान्नामचिन्मात्रे प्रीतिस्संजायतेऽधिका ॥ १४॥

संयम सदा धारे रहे, इन चारों का त्याग न करे कदाचित् भूलिके। संयम समेत होने से श्रीरामनाम सच्चिदानन्द में यथार्थ प्रीति दिन २ छिन २ अधिक बढ़ती है ॥ १४॥

प्रथमाभ्यासकाले च ग्रन्थ नामात्मकं सुधी ।
द्वियाममेकयामं वा चिन्तनीयं प्रयत्नतः ॥ १५॥

प्रथम अभ्यास करने वालन को उचित है के काहू समय

श्रीरामनाम परत्व, प्रतिपादक ग्रन्थन को विचारें दो पहर अथवा एक पहर सावधान चित्त होयके. औ विरक्त नाम रसिकन को संगति भी जो प्राप्त हो सके तौ दो चार घड़ी करे। उनकी संगति से श्रीनाम में महाआश्चर्य करे प्रयत्न समेत सकल मत शास्त्रन को छोड़िके ॥१५॥

यदा नाम्नि लयं याति चित्तं क्लेशविवर्जितम् ।
तदा न चिन्तयेत् किंचिल्लब्ध्वा ह्यानन्दमन्दिरम् ॥१६॥

जब नाम में चित्त लीन हो जाय श्रम बिना सहज में, तब फेर कुछ चिंतनन करे, काहे से विचारादि साधन समूह केवल वृत्ति के लय निमित्त हैं। जब लीनता हुई तब परमानन्द को मन्दिर परात्पर श्रीसीताराम स्वरूप पाय गयो, श्रीरामनाम का प्रताप रटन बिना जानो नहीं जात है ॥१६॥

तत्रैव श्री ब्रह्मवाक्यं नारदं प्रति

चिन्तामणिसमं कायं लब्ध्वा वै भारतेऽमलम् ।
संस्मरेन्न परं नाम मोहात् स पतित ध्रुवम् ॥१७॥

उसी पुरान में श्री ब्रह्माजी का वचन श्रीनारद मुनीश्वर के प्रति है। चिन्तामनि के सम नाना सुख सौंपन्न दुख-दमन कारन मनुष्य तन निर्मल भरतखंड में पाय के जौन नीच महाशक्त होय के श्रीरामनाम सुखधाम रटन नहीं करत हैं, सो अवश्यमेव चौरासी लाख योनिन में कोटिन बरष तक भ्रमेगो, औ नरककुण्ड में गिरेगो, तब याको पछतावा होयगो के हाय ! मनुष्य तन पायके भी हम अपना उद्धार न किया धिक्कार हमको है ॥१७॥

मानुषं दुर्ल्लभं प्राप्य सुरैरपि समर्चितम् ।
जपस्व्यं सावधानेन रामनामाखिलेष्टदम् ॥१८॥

ताते उचित है के दुर्लभ मानव तन देवतन करिके पूजित

प्रशंसित पायके सर्वाशा त्यागि के श्रीरामनाम जपने योग्य है काहे के सम्पूरन मनोरथ प्रदायक केवल श्रीरामनाम ही है ताते छन मात्र त्यागनो परम अनुचित है ॥१८॥

श्रुत्वा श्रीनामम्माहात्म्यं यथार्थं श्रुतिपूजितम् ।
सर्वाशां संविहायासु स्मर्तव्यं सर्वदा बुधैः ॥१९॥

श्रीरामनाम माहात्म्य सम्पूर्ण श्रुतिन करिके पूजित सुनिके सज्जन सत्संगिन को उचित है केश्री रामनाम छन छन में स्मरन करे, सर्वाशा त्यागिके, यही परम पंडिताई सुबुद्धिताई है। और सब चतुराई पेट भरन निमित्त है ॥१९॥

विष्णुनारायणादीनि नामानि चामितान्यपि ।
तानि सर्वाणि देवर्षे जातानि रामनामतः ॥२०॥

दोहा

जिनकी रसना नाम रस रसी असीं पद पाय ।
खसी वासना तिन्हन की हँसी उभय विसराय ॥१॥

विष्णु नारायण वासुदेवादिक अनंत नाम हैं सब पतित-पावन हैं। हे नारद मुनीश्वर! समस्त नाम श्रीरामनाम के अंशांश शक्ति गुन से प्रगट होते हैं। पुनि महाप्रलय समय वहीं लीन हो जाते हैं। इह श्रीब्रह्माजी का सिद्धांत वचन है ॥२०॥

शृणु नारद सत्यस्त्वं गुह्याद् गुह्यतमं मतम् ।
रामनाम सकृज्जप्त्वा याति रामास्पदं परम् ॥२१॥

हे नारद! सत्य सत्य हम कहते हैं। गुप्त से गुप्त वार्त्ता है। सब के कहने सुनने लायक नहीं हैं श्रीरामनाम महत्त्व अधिकारी प्रति यथार्थ कहना चाहिये। लंपट प्रति संक्षेप रीति से कहे जिसमें उसकी मति सावधान रहे। एक बार श्रीनाम उच्चा-

रन किये से परम प्रद का लाभ होत है आश्चर्य्य न जानना, श्री नाम का बड़ा प्रताप है बारम्बार श्रीरामनाम उच्चारन जो सन्त करते हैं सो सनेह के सम्बन्ध से, कुछ कृतार्थ होवे को नहीं। सामान्यजन को जो उपदेश है बारम्बार रटन का तिसका प्रयोजन इह है के एक बार उनके अर्थ है जो फेर प्रभु प्रतिकूल आचरन न करें, औरनको बारबार चाहिये जिसमें शुद्ध बने रहें ॥२१॥

सर्वेषां हरिनाम्नां वै वैभवं रामनामतः ।
ज्ञातं मया विशेषेण तस्मात् श्रीनाम संजपः॥२२॥

समस्त हरिनामन का ऐश्वर्य प्रताप श्रीरामनाम के अंशांश से है। इस बात को हमने कोटिन बरषन के साधन करिके विचारा है ताते सनेह समेत तत्पर होय के श्रीनाम रटन करो २२॥

क्षणार्द्धं जानकीजानेर्नाम विस्मृत्य मानवः ।
महादोषालयं याति सत्यं बच्मि महामुने ॥२३॥

हे महामुने ! क्षनके आधे तक भी जो श्रीरामनाम गुन भूलि के और कार्य्य में आशक्त होते हैं सो महादोषन तापन को घर जो नरकादिक तिसमें जाते हैं, सत्य सत्य मेरा वचन है। श्रीनाम विस्मरन करने सम और पाप नहीं है ॥२३॥

रामनामप्रभावेण सीताराम परेश्वरम् ।
साक्षात्कारं प्रपश्यन्ति रामनामार्थचिन्तकाः ॥२४॥

श्रीरामनाम के प्रभाव से श्रीसीताराम परमेश्वर सच्चिदानन्द का साक्षात् दरशन भीतर बाहर हो जाता है श्रीरामनामार्थ चिंतन करने वाले सर्वदा देखते ही रहते हैं ॥२४॥

तत्रैव श्रीसनत्कुमारवाक्यं नारदं प्रति

सर्वापराधकृदपि मुच्यते हरिसंश्रयः ।
हरेरप्यपराधान् यः कुर्य्याद् द्विपदपांशनः ॥२५॥

श्रीपद्मपुरान ही में सनत्कुमार जी का वचन नारद मुनि से है—सकल अपराध पाप किये होय सो श्रीरामचन्द्र महाराज के शरन भये निष्पाप निर्दोष हो जाता है। जो मनुष्यन में अधम श्रीराम का अपराध करते हैं सो और साधन से कृतार्थ नहीं होते। श्रीमहाराज का सेवापराध बत्तीस है तथा वेद प्रतिकूल मनमुखी आचरन सो भी बड़ा कसूर है ॥२५॥

नामाश्रयः कदाचित् स्यात्तरत्येव स नामतः।
नाम्नो हि सर्वसुहृदो ह्यपराधात्त पतन्त्यधः ॥२६॥

ऐसे अपराधी भी जो संत गुरु शरन होय के जो श्रीनाम करुना सागर के शरन होय तौ कृतार्थ ही जाय, परन्तु होना नाम के शरन दुर्लभ है जो श्रीनाम सर्व सुखदायक मित्र का अपराध करता है सो नीचे को गिरता है, नरक जाता है २६॥

श्रीनारद उवाच

के तेऽपराधा विप्रेन्द्र नाम्नो भगवतः कृताः।
विघ्नन्ति नृणां कृत्यं प्राकृतं ह्यानयन्ति हि ॥२७॥

इह वचन सुनि के श्री नारद जू प्रश्न करते हैं—हे महामुने! श्रीरामनाम सम्बन्धी केते अपराध हैं जिनके किये से सब सुकृत नाश सो जात है औ महामलीन संसारिन को गति प्राप्त होत है सो अपराधन का स्वरूप कृपा करिके कहो। श्रीसनत्कुमार मुनीश्वर उत्तर देते हैं सो सुनो २७॥

श्री सनत्कुमार उवाच

सतांनिन्दानाम्नः प्रथममपराधं वितनुते
यतः ख्यातिं यातां कथमुत्सहते तद्विगर्हाम्।
शिवस्य श्रीविष्णोर्य्यइह गुणनामादि सकलं
धिया भिन्नं पश्येत् स खलु हरिनामाहितकरः ॥२८॥

श्रीसनत्कुमार जी नारद मुनि से दश नामापराध गनावते हैं लच्छन समेत। संत जो नाम रसवंत हैं तिनकी निन्दा करना प्रथम अपराध असाध्य रोगसम है। निन्दा स्वरूप इह है के उन के वचन का निरादर करना अपने असत्पक्ष का स्थापन करना, उनको दुखावना इह निन्दा का स्वरूप है। जो कोऊ कहे के संत के निन्दा करने में नामापराध कैसे भया ? तिसमें हेतु कहते हैं- जिन संतन के द्वारे नाम को प्रसिद्धता लोकन में भई तिनकी बुराई को श्रीनाम कैसे सहि सकेंगे। संतन के बिना नाम महा-राज को कोन जानता। दूजो अपराध सुनो श्रीमहादेव जो का गुन नामादिक जो श्रीप्रभु ते भिन्न मानते हैं अभिप्राय श्रीशंकर की भिन्न ईशता प्रतिपादन करते हैं, सोऊ श्रीनामापराध है अभिप्राय इह है के परेशता प्रभु श्रीरामचन्द्र ही में है और सब तदाधीन हैं। अथवा अभेद मानना भी अपराध है सेवक स्वामी मानना धर्म है ॥२८॥

गुरोरवज्ञा श्रुतिशास्त्रनिन्दनं
तदार्थवादो हरिनाम्निकल्पनम्।
नाम्नोबलाद्यस्य हि पापबुद्धिर्न
विद्यते तस्य यमैर्हि शुद्धिः ॥२९॥

श्री गुरुन की अवज्ञा तीजो अपराध है अवज्ञा कहिये आज्ञा उल्लंघन करना। वेद पुरान की निन्दा करना चौथो अपराध है इहां निन्दा का अर्थ इह है के सुनिके कुतर्क करना। पांचवा अपराध नाम प्रताप सुनिके यथार्थ न मानना प्रशंसामात्र मानना। जैसे तीर्थ पाठादिकों की प्रशंसा पुरान में लिखी है तैसे ही श्री नाम की भी बड़ाई है वास्तव नहीं। छठो अपराध सुनो-जानि जानि के नाम जपके बलसे पाप करना महापाप है उनकी शुद्धता

काहू साधन से यमलोक में भी न होयगी, जानिके पाप न करना ॥२९॥

धर्म-व्रत-त्याग-हुतादिसर्वशुभक्रियासाम्यमपि प्रमादः।
अश्रद्दधानेऽप्यमुखेऽप्यशृण्वति यश्चोपदेशं स नामापराधः ॥३०॥

धर्म, व्रत, दान, त्याग तपादिक जेते शुभाचरन वेद पुरान में लिखे हैं तिनको श्रीनाम के सम मानना कृतार्थ करने में सो भी असाध्य अपराधहै जाते सर्वेश्वर महाराज को सामान्य प्रजा के सम कहते हैं इह सप्तम अपराध है अष्टम अपराध इह है के बिना श्रद्धा रुचि चाह सनमुखता श्रवनाभिलाष बिना जो लालच बस श्रीरामनाम का उपदेश करते हैं सो महाअपराध है जाते श्री नामपरत्व विचार रहित है। अभिप्राय इह है के नामपरत्व रहस्य न सुनावे, सहज रीति सेती संतौ कहते आये हैं। नवम अपराध इह है के नाम जपना परन्तु प्रमाद का त्यान न करना असावधान रहना, सतसंग न करना, नाममय विश्व जानि के हिंसाका त्याग न करना, नवम अपराध है ॥३०॥

श्रुत्वापि नाममाहात्म्यं यः प्रीतिरहितोऽधमः।
अहं ममादिपरमो नाम्नि सोऽप्यपराधकृत ॥३१॥

श्रीरामनाम माहात्म्य सुनिके जो प्रीति प्रतीति रहित हैं, और अहंकार ममाकार मद में माते हैं सो भी नामापराध हैं। दशम नामापराध इह है, काहेते कि ऐसे सुखसागर स्वभाव माहात्म्य सुनिके संसार त्याग न कियो श्रीनामरस न चाख्यो ताते अपराधी है ॥३१॥

अपराधविनिर्मुक्तो यत्नं नाम्नि समाचर।
नाम्नैव तव देवर्षे सर्वं सेत्स्यति नान्यतः ॥३२॥

हे नारद जी! ताते उचित है कि सब अपराधको त्यागिके

श्रीरामनाम जपमें यतन पुरुषार्थ करो! श्रीरामनाम ही से सम्पूर्ण सुख स्वाद का लाभ होयगा और साधन से अनन्त कल्प में परमानन्द दुर्लभ है ॥३२॥

जाते नामापराधे तु प्रमादेन कथञ्चन।
सदा संकीर्तयन्नाम तदेकं शरणो भवेत्॥३३॥

जो भूलि के प्राचीन मलीन संस्कार कुसंग पाय जो कभी नामापराध हो जाय तो सर्वदा श्रीनाम कीर्त्तन करे औ नाम ही को अपना रक्षक मालिक माने, औ नामानुरागी संतन का नाम कीर्तन करे, संत सेवा करे, तौ सब अपराध मिट जाय ॥३३॥

नामापराधयुक्तानां नामान्येव हरन्त्यघम्।
अविश्रान्तप्रयुक्तानि तान्येवार्थकराणि यत्॥३४॥

श्रीरामनाम अपराधिन का अपराध नाम ही के जपे से मिटेगा परन्तु श्रीनाम का निरन्तर रटन करे काहू समय त्यागे नहीं ॥३४॥

नामैकं यस्य वाचिस्मरणपथि गतं श्रोत्रमूलेगतं वा
शुद्धं वाऽशुद्धवर्णं व्यवहितरहितं तारयत्येव सत्यम्।
तद्दे देह द्रविणजनता लोभपाखण्डमध्ये
निक्षिप्तंस्यान्न फलजनकंशीघ्रमेवात्र विप्र॥३५॥

श्रीरामनाम एक अद्वितीय जाके वचन अथवा मन श्रवन के मार्ग में प्राप्त भयो है शुद्ध अथवा अशुद्ध एक व्यवधान बिना सो तरेगो संदेह नहीं, श्रीनाम वाको तारेंगे सही। अशुद्ध का अर्थ स्पष्ट नाम न कहना शीघ्रता में रम रम हो जाता है। ऐसे श्रीरामनाम को जो देह, धन, मान, प्रतिष्ठा, जमात, दंभ, पाखंड के अर्थ रटन कियो सो शीघ्र न कृतार्थ होयगो धीरे-धीरे

तरेगो। हे नारद जी ! ताते निष्काम ही नाम जपो और कामना व्यर्थ है । नाम बल पायके पाप करना नाम को खिझावना है जैसे बार-बार मल लगाय के श्री सरजू जी में धोना अपराध है यद्यपि मलीनता छूट जायगी परन्तु उचित नहीं है । ३५॥

तत्रैव श्रीवशिष्ठवाक्यं भरद्वाजप्रति

अहो महामुने लोके रामनामाभयप्रदम् ।
निर्मलं निर्गुणं नित्यं निर्विकारं सुधास्पदम् ॥३६॥

श्रीवशिष्ठ जी नारद जी से कहते हैं हे महामुने ! बड़ो आश्चर्य है के श्रीरामनाम अभय दाता स्वच्छ, गुनातीत, अविनाशी, सकल विकार रहित, महा अमृत को घर । ३६॥

प्रत्यक्षं परमं गुह्यं सौशील्याद्दि गुणार्णवम् ।
त्यक्ता मन्दात्मका जीवा नानामार्गानुयायिनः॥३७॥

प्रगट परम गुप्त दोनों सुशीलतादिक गुनन को सागर अगम अगाध तिनका निरादर करिके नाना कुमार्गन में कष्ट करके चलते हैं, महामंद मति हैं, जाते ऐसे स्वामी का अनादर करते हैं । ३७॥

यत्र तत्र स्थितो वाऽपि संस्मरेन्नाममुक्तिदम् ।
सर्वपापविशुद्धात्मा स गच्छेत् परमां गतिम् ॥३८॥

चाहे जौन भले बुरे ठौर रहिके नाम मुक्तिदाता का स्मरन करे काहू भांति से, सो जन सब पाप तापको नाशि करिके परमधाम जायगा संशय नहीं है ॥३८॥

मोहानलो लसज्ज्वाला ज्वलल्लोकेषु सर्वदा ।
श्रीनामाम्भोधिरच्छायां प्रविष्टो नैव दह्यते ॥३९॥

मोहमय अग्नि से सब संसार जल रहा है सो जो भाग्यवश

करिके श्रीनाम घनश्याम महामोद धाम के छाया तले आवै तौ शीतल विशेष हो जाय, फिर मोहादिक आग से न जले। नामोच्चारन करना ही छाया के नीचे आवना है ॥३९॥

राममनामजपादेव रामरूपस्य साम्यताम्।
याति शीघ्रं न संदेहो सत्यं सत्यं वचो मम ॥४०॥

श्रीरामनाममें अति आशक्ति समेत ततपर भये से श्रीराम के लोक में साम्यभाव को प्राप्त होत है। तात्पर्य—सारूपादिक मोक्ष पावत है, सन्देह बिना शीघ्र ही। सत्य सत्य मेरो वचन जानना ॥४०॥

तत्रैव श्रीनारद वाक्यमम्बरीयं प्रति

सकृदुच्चारयेद्यस्तु रामनाम परात्परम्।
शुद्धान्तःकरणो भूत्वा निर्वाणमधिगच्छति ॥४१॥

श्रीनारद जी अम्बरीष ऋषि से कहते हैं। श्रीरामनाम को परात्पर जानिके जो एक बार उच्चारन करता है सो भी शुद्ध अन्तःकरन होय के परम मोक्ष को प्राप्त होत हैं संशय बिना शीघ्र ही ॥४१॥

कीर्तयन् श्रद्धया युक्तो रामनामाखिलेष्टदम्।
परमानन्दमाप्नोति हित्वा संसार बन्धनम् ॥४२॥

श्रद्धा विश्वास सहित जो नाम कीर्तन करते हैं तिनका सब मनोरथ पूरन होता है और संसार बन्धन छूट जाता है परमानन्द जो परात्पर स्वरूप सुख ताको प्राप्त होत है ॥४२॥

अनन्यगतयो मर्त्या भोगिनोऽपि परन्तप।
ज्ञानवैराग्यरहिता ब्रह्मचर्य्यादिवर्जिताः ॥४३॥

जो श्रीरामनाम के अनन्य हैं, सब आशा त्याग किये हैं।

यद्यपि भोग भी करतेहैं लोगों को दुखावते भी हैं ज्ञान वैराग्य से रहित भी हैं, ब्रह्मचर्य्यादिक साधन से हीन भी हैं ॥४३॥

सर्वोपायविनिर्मुक्ता नाममात्रैकजल्पकाः ।
जानकीवल्लभस्यापि धाम्नि गच्छन्ति सादरम् ॥४४॥

समस्त भगवत्प्राप्ति के उपाय से रहित हैं, परन्तु नाम मात्र उच्चारण करते हैं सो अवश्यमेव श्रीजानकी जीवन के परात्पर धाम साकेत गुनातीत लोक में जाँयगे सन्देह नहीं है, वहाँ बड़े आदर को प्राप्त होयँगे। जो नाम अनन्य हैं उनसे बुराई होती नहीं, जो प्रारब्ध द्वारा हो जाय सो श्रीनाम कृपा से शांति हो जात है श्रीनाम का बड़ा प्रताप है ॥४४॥

दुर्ल्लभं योगिनां नित्यं स्थानं साकेतसंज्ञकम् ।
सुखपूर्वं लभेत्तत्तुनामसंराधनात् प्रिये ॥४५॥

योगी जो आठहू अंग सम्पन्न है जन्म भरि अभ्यास किये हैं, तिनको भी दुर्लभ विशेष जो साकेत परात्परधाम श्रीअयोध्या जी से श्रीधाम की प्राप्ति अनायास से सुख समेत श्रीरामनामानुरागी को होत है हे पार्वति ॥४५॥

तत्रैव श्रीअर्जुनंप्रति श्रीकृष्णवाक्यम्

अर्जुन उवाच

भुक्तिमुक्तिप्रदातॄणां सर्वकामफलप्रद ।
सर्वसिद्धिकरानन्त नमस्तुभ्यं जनार्दन ॥४६॥

वाही पुरान में श्रीकृष्णचन्द्र अर्जुन को उपदेश करते हैं। तहां प्रथम अर्जुन को प्रश्न विशेष नहीं सामान्य है। मुक्ति के दायक! सर्व काम पूरक सकल सिद्धि करनहारे जनन को सुखदायक ॥४६॥

यं कृत्वा श्री जगन्नाथ मानवा यान्ति सद्गतिम् ।

ममोपरि कृपां कृत्वा तत्त्वं ब्रूहिसुखालयम् ॥४७॥

जौन दिव्य आचरण करिके मनुष्य परम धाम जाते हैं सो आचरण सुखसदन कृपा करिके हम पर कहिये ॥४७॥

श्रीकृष्ण उवाच

यदि पृच्छसि कौन्तेय सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।
लोकानान्तु हितातार्थाय इह लोके परत्र च ॥४८॥

श्रीकृष्णचन्द्र कृपा करिके अर्जुन से कहते हैं—हे कौन्तेय ! जो तुमने परमोत्तम प्रश्न किया है सो मोददायक है । श्रीराम-नाम सम्बन्धी प्रश्न का फल कौन कहि सकता है । सर्वोपरि श्री रामनाम है । बड़भागी कोटिन में कोई नाम महत्त्व जानते हैं नाम रहस्य महागंभीर है ॥४८॥

रामनाम सदा पुण्यं नित्यं पठति यो नरः ।
अपुत्रो लभते पुत्रं सर्वकामफलप्रदम् ॥४९॥

दोहा

रामनाम संजीवनी महामनोहर मूरि ।
जासु जीह जिय बिचबसी तासु सुजस भलिभूरि ॥१॥

श्रीरामनाम महापवित्र सिरोमनि जो सनेह समेत नित्य उच्चारन करते है सो सब प्रकार के सुख को पावते हैं, कोई फल बाकी नहीं रहता है। अनन्त जन्म की बांझ होय वाहू के परम पुनीत पुत्र होत है श्रीनाम जपने से ॥४९॥

मङ्गलानि गृहे तस्य सर्वसौख्यानि भारत ।
अहोरात्रं च येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम् ॥५०॥

समस्त मंगल वाके गृह में विराजमान होते हैं । हे भरत-बंशोद्भव अर्जुन ! हम साँच कहते हैं जौन जन दिन रात्रि

नाम का रटन करत हैं। कदाचित् युगल बरन को भुलावते नहीं जो सब भाँति सुख सदन है ॥५०॥

गंगा सरस्वती रेवा यमुना सिन्धु पुष्करे ।
केदारे तूदकं पीतं राम इत्यक्षरद्वयम् ॥५१॥

श्रीगङ्गा, सरस्वती, नर्मदा, यमुना, पुष्करादि कोटिन तीर्थन में स्नान, दान जिसने विधि समेत किया। केदार क्षेत्र में कूप का कोटिन बार जलपान करि लिया। जिसने काहू भाँति से श्रीराम अभिराम दोऊ अक्षर परमेश्वर स्वरूप उच्चारन किया तिसने सब कुछ किया साँच जानना ।५१॥

अतिथेः पोषणञ्चैव सर्वतीर्थावगाहनम् ।
सर्वपुण्यं समाप्नोति रामनाम प्रसादतः ॥५२॥

अतिथि सेवा का बड़ा महत्व है सो उसने विधि समेत अनन्त युग लौं करि लिया औ सब तीर्थन में विधि समेत अमित-बार स्नान कर चुका; तथा सकल सुकृतन का फल उसको हो चुका जिसने श्रीरामनाम युगल बरन मनहरन का उच्चारन किया तिसके करने को बाकी कछु न रहा। श्रीनाम प्रसाद से सब सुख फल का अखंड लाभ दुर्लभ उसी को प्राप्त होता है। हे प्यारे! सब साधन त्यागि के नाम सुधा पान करो ॥५२॥

सूऽर्यपर्व कुरुक्षेत्रे कार्तिक्यां स्वामि दर्शने ।
कृपापात्रेण वै लब्धं येनोक्तमक्षरद्वयम् ॥५३॥

सूर्य्यपर्व नाम सूर्य्यग्रहन पर्वपर कोटिन बार कुरुक्षेत्र में विधि पूर्वक नहाये तथा कार्तिक में स्वामिकार्तिक क्षेत्र का विधि समेत कोटिन बार दर्शन करे सो समस्त फल तिस श्रीनाम कृपापात्र को प्राप्त होता है जो श्रीराम दो अक्षर उच्चारन करते हैं॥५३॥

न गंगा न गया काशी नर्मदा चैव पुष्करम् ।
सदृशं रामनाम्नस्तु न भवन्ति कदाचन ॥५४॥

काशी, गया, प्रयाग, पुष्कर, नर्मदादिक अनन्त कोटि तीर्थ पतित पावन श्रीरामनाम के सम नहीं हो सकते हैं पवित्र करने में ॥५४॥

येन दत्तं हुतं तप्तं सदा विष्णुः समर्चितः ।
जिह्वाग्रे वर्तते यस्य राम इत्यक्षरद्वयम् ॥५५॥

जौन अनन्त भाँति से होम, दान तप श्रीभगवान की पूजा किये हैं सो सबन को फल जो प्राप्त होत है सो केवल श्री-नाम दो बरन जापक को होता है ॥५५॥

माघस्नानं कृतं येन गयायां पिण्डपातनम् ।
सर्वकृत्यं कृतं तेन येनोक्तं रामनामकम् ॥५६॥

श्रीप्रयागराज में माघ स्नान अनन्त बार जिसने विधि समेत किया होय तथा श्रीगया जी में कोटिन बार पिंड दिया होय और वेद पुरान संहिता में जेते शुभाचरन कहे हैं सो सब फल एक बार श्रीरामनाम उच्चारन कियेसे प्राप्त होत है श्रम बिन।। ऐसे श्रीरामनाम को छोड़ि के कौन अधम अन्य साधन में रुचि करे ॥५६॥

प्रायश्चित्तं कृतं तेन महापातकनाशनम् ।
तपस्तप्तं च येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम् ॥५७॥

कवित्त

चाहो चारों ओर दौर देखो गौर ज्ञान बिना,
दीनता न छीन होय झीन अघ आग है।
जहाँ तक साधन सुराधन विलोकिये जू,
बाधन उपाधन सहित नट बाग है।

तीरथ की आस सो तो नाहक उपास्य हेतु,
एक बार राम कहे कोटिन प्रयाग हैं।
युगल अनन्य इत उत भ्रम श्रम दाम्र,
नाम के रटन बिन छूटत न दाग है ॥१॥

अष्टादश स्मृति उक्त सब साधन प्रायश्चित उसने किया विधि पूर्वक जिसने श्रीराम महामोद धाम उच्चारन किया। सम्पूर्ण तप करि चुका, वाको कुछ कर्त्तव्य नहीं है जौन जन ने श्रीनाम रटन किया ॥५७॥

चत्वारः पठिता वेदास्सर्वे यज्ञाश्च याजिताः।
त्रिलोकी मोचिता तेन राम इत्यक्षरद्वयम् ॥५८॥

चारों वेद को शाखा अंग उपांग समेत तिसने अनन्त बार पाठ कर लिया और समस्त यज्ञन को विधि समेत तिसने अनन्त बार कर लिया औ तीन लोक के जीवन को दुख जाल से तिसने छुड़ाय दिया भली भाँति से जिस बड़भागी के मुखचन्द्र से श्रीराम दोऊ बरन अभिराम उच्चारन भया तिसने सब कृत्य भावसमेत अनन्त बार कर लिया सत्य जानोगे, दृढ़ करि मानोगे ॥५८॥

भूतले सर्वतीर्थानि आसमुद्रसरांसि च।
सेवितानि च येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम् ॥५९॥

ब्रह्माण्ड के सब तीर्थ समुद्र पर्यन्त सब सरोवरन में तिसने नहान, दान, सेवन कोटिन बार करि चुका जो श्रीराम नाम एक बार कैसेहू उच्चारन किया ॥५९॥

अर्जुन उवाच

यदा म्लेच्छमयी पृथ्वी भविष्यति कलौयुगे।
किं करिष्यति लोकोऽयं पतितो रौरवालये ॥६०॥

यह बात परम तत्वमय श्रीरामनाम सम्बन्धी सुनिके श्री अर्जुन पूछते हैं हे भगवन्! जब सम्पूर्णभूमि कलियुग में म्लेच्छमयी हो जायगी तौन समयमें रौरव नरकरूप काल हो जायगा तब जीव कौन साधन करिके परम पद जायँगे सो कृपा करिके कहिये मेरे सन्देह को दहिये ॥६०॥

श्रीकृष्ण उवाच

न सन्देहस्त्वया कार्यो न वक्तव्यं पुनः पुनः ।
पापी भवति धर्मात्मा रामनाम प्रभावतः ॥६१॥

श्रीकृष्णचन्द्र जी अर्जुन को उत्तर देते हैं श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं—हे अर्जुन! श्रीरामनाम में सन्देह नहीं करिबे योग्य है बार बार कहना भी सन्देह समेत व्यर्थ है। चाहे जैसा पापी होय श्रीरामनाम प्रताप से शुद्ध धर्मात्मा हो जात है ॥६१॥

न म्लेच्छस्पर्शनात्तस्य पापं भवति देहिनः ।
तस्मात्प्रमुच्यते जन्तुर्यस्मरेद्रामद्वयक्षरम् ॥६२॥

और म्लेच्छन के स्पर्श से तिनको पाप कुछ नहीं होयगा। म्लेच्छ सम्बन्धी पाप से वह छूट जायँगे शीघ्र ही जो श्रीनाम दोऊ बरन मनमरन को जपैंगे ॥६२॥

रामस्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
कुलायुतं समुद्धृत्य रामलोके महीयते ॥६३॥

श्रीरामनाम सम्बन्धी स्त्रोत को पाठ करेंगे श्रद्धा विश्वास भक्ति समेत जन दश हजार पीढ़ी अपनी उद्धार करिके श्रीराम लोक में पूजित होयँगे सन्देह नहीं करना, श्रीरामनाम का महाप्रभाव है ॥६३॥

रामनामामृतं स्तोत्रं सायं प्रातः पठेन्नरः ।

गोघ्नःस्त्रीबालघाती च सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥६४॥

श्रीरामनाम मय अमृतरूप स्तोत्र जो जन सांझ प्रात प्रेम संयुक्त पाठ करेंगे सो गोहत्या,बालकहत्या, स्त्रीहत्या सेछूट जायँगे संशय नहीं है। बार बार जो पाप हरन फल का निरूपन इस ग्रन्थ पतित पावन में होता है तिसका कारन यह है के अनन्त जन्म से मन मलीन हो रहा है सो श्रीनाम ही उच्चारन से स्वच्छ होगा दूसरे अभिप्राय यह है के श्रीनाम प्रताप बिना बारम्बार परत्व कहे हृदय में ठहर नहीं सकता है, मन दुष्ट है ॥६४॥

तत्रैव श्रीअगस्त वाक्य श्रीरामं प्रति

विश्वरूपस्य ते राम विश्वशब्दा हि वाचकाः ।
तथापिरामनामेदं प्रभो मुख्यतमं स्मृतम् ॥६५॥

उसी पद्म पुराण में श्रीअगस्त जी का वचन श्रीराम प्रति विचारो। हे श्रीराम परात्पर! आपका सब विश्व स्वरूप है और जेते शब्द विश्व में हैं सो सब शब्द आपके वाचक हैं तो भी श्रीरामनाम सर्वोपरि उत्तमोत्तम है ॥६५॥

तत्रैव श्रीव्यास वाक्यं विप्रान्प्रति

रामनामांशतो याता ब्रह्माण्डाः कोटिकोटिशः ।
रामनाम्नि परे धाम्नि संस्थिता स्वामिभिस्सह॥६६॥

उसी ठौर श्रीव्यासजी का वचन विप्रन से है। श्रीरामनाम अंश से कोटिन ब्रह्माण्ड उत्पत्ति होत हैं और श्रीरामनाम सत्ता में सब टिके हैं अपने अपने स्वामिन समेत। श्रीरामनाम परम तेजमय है ॥६६।

विश्वासःसुदृढो नाम्नि कर्त्तव्यः साधकोत्तमैः ।
निश्चयेन परां सिद्धिं शीघ्रं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥६७॥

साधकोत्तमन को चाहिये के सर्व ओर ते मन खींच के सुदृढ़

एकरस श्रीरामनाम में करें, बिना प्रतीत किये उत्कृष्ट सिद्धि चमत्कार सुखसार प्राप्त नहीं होत हैं। या बात में संशय न करना ॥६७॥

चित्तस्यैकाग्रता विप्रा नाम्नि कार्या प्रयत्नतः।
वृत्तिरोधं विना हार्दं दुर्लभं मुनीनामपि ॥६८॥

जैसे बने तैसे चित्त की एकाग्रता श्रीरामनाम में करे, जौलौं रजोगुनी तमोगुनी वृत्ति को न रोकेगा तौलौं परमानन्द दुर्लभ बड़े लोगन को भी सत्य जानना ॥६८॥

अहोभाग्यमहोभाग्यमहोभाग्यं पुनः पुनः।
येषां श्रीमद्रघूत्तमनाम्नि संजायते रतिः ॥६९॥

बड़ा आश्चर्य भाग है हजारों उन लोगों का, जिन बड़भागिन की प्रीति श्रीरघूत्तम नाम में साँची है उनके सम भाग्यवान कोऊ नहीं है ॥६९॥

स्कन्दपुराणे शिववाक्यं शिवां प्रति

कामात्क्रोधाद्भयान्मोहान्मत्सरादपि यस्स्मरेत।
परंब्रह्मात्मकं नाम रामइत्यक्षरद्वयम् ॥७०॥

स्कन्द पुरान में भी वचन है श्रीरामनाम परात्परेश्वर को काम सम्बन्ध से चाहे क्रोध मोह ईर्ष्यादि सम्बन्ध से जप करे स्मरण करे, कृतार्थ हो जायगा हे पार्वति! संशय नहीं हैं। जाते श्रीरामनाम परब्रह्म स्वरूप अनन्य प्रभाव समेत है ॥७०॥

येषां श्रीरामचिन्नाम्नि परा प्रीतिरचंचला।
तेषां सर्वार्थ लाभश्च सर्वदास्ति शृणु प्रिये ॥७१॥

जिन जनों को सच्चिदानन्द स्वरूप नाम में अचंचल एक रस प्रीति है तिन्हों को सर्व मनोरथों का लाभ सर्वदा समुझना

चाहिए कांहू भाँति की उनको कमती होती नहीं है ॥७१॥

गिरिराजसुते धन्या नास्ति त्वत्सदृशी क्वचित्।
यस्मात्तव महाप्रीतिर्वर्तते रामनाम्नि वै ॥७२॥

हे प्रानप्रिय पार्वती ! तुम्हारे सम धन्य कोई नहीं है कोऊ लोक में। जाते तुम्हारी प्रीति अखंड कामना रहित श्रीरामनाम में है तुम सर्व भाँति से सब जगत में पूजनीय होवोगी ॥७२॥

सर्वेऽवतारा: श्रीरामनामशक्तिसमुद्भवा: ।
सत्यं वदामि देवेशि नाममहात्म्यमद्भुतम् ॥७३॥

हे गिरिराजसुते प्रिये ! श्रीरामनाम का वैभव अपार है कोऊ कहि न सकता है। जेते अवतार जगत उद्धार निमत्त लोक में प्रगट होते हैं सो सब श्रीरामनाम शक्ति प्रताप अंश से समझो सत्य सत्य हम कहते हैं । श्रीरामनाम का आश्चर्य महत्व है ताते श्रीरामनाम सर्वोपरि सर्वकाल जप करिबे योग्य है । सर्वाभिलाष त्याग करिके कलियुग में श्रीरामनामही के उच्चारन से मोक्ष है, और उपाय नहीं है सत्य सत्य जानना ॥७३॥

ब्रह्माण्डपुराणे धर्मराजवाक्यं श्रीरामचन्द्र प्रति

जयस्व रघुनन्दन रामचन्द्र प्रपन्नदीनार्तिहराखिलेश।
वाञ्छामहे नाम निरामयं सदा प्रदेहि भगवन् कृपया कृपालो ॥७४॥

ब्रह्मांड पुरान में श्रीधर्मराज का वचन-श्रीरामचन्द्र! आपकी जय होय आप सर्वदा भक्तन के रक्षा करने में समर्थ रहें। हे रघुनन्दन! हे प्रपन्न शरनागत ! दीनन के आरत हरन हारन में शिरोमनि ! सबके स्वामी ! बार २ विनय करिके मैं याचना करता हूँ कृपा करिके हे भगवन् ! अपना नाम परमोत्तम अभिराम हमको दीजिये अभिप्राय यह है के बिना श्रीराम के दिये

नाम चित्त में निवास नाही करत है ताते श्रीनामी से मांगनो चाहिये ॥७४॥

त्वन्नामसंकीर्त्तनतो निशाचरा द्रवन्ति भूतान्यपयान्ति चारयः ।
नाशं तथा सम्प्रति यान्ति राजन्ततः परं धाम प्रयाति साक्षात ॥७५॥

आपके श्रीनाम कीर्त्तन सुनिके सब भूत, प्रेत, राक्षस, शत्रु नाश हो जाते हैं। सब विघ्न करनहारे तिसके पीछे साक्षात् श्री रामधाम में जाते हैं। हे महाराज ! आपका नाम महा बलवान् है। ७५॥

सुखप्रदं रामपदं मनोहरं युगाक्षरं भीतिहरं शिवाकरम्।
यशस्करं धर्मकरं गुणाकरं वचो वरं मे हृदयेऽस्तु सादरम् ॥७६॥

श्रीरामनाम सुख प्रदाता मनोहर सकल भयहारी महामङ्गल कर महायशस्कर धर्मकर समस्त गुनाकर वचन को श्रेष्ठ करनहारे श्रीरामनाम मेरे हृदय में आदर समेत निवास करें इह प्रार्थना है ॥७६॥

रामनामप्रभा दिव्या वेदवेदान्तपारगाः
येषां स्वान्ते सदा भाति ते पूज्या भुवनत्रये ॥७७॥

श्रीरामनाम की प्रभा परम दिव्य वेद वेदान्त से पार है। जिनके हृदय में श्रीरामनाम प्रभा सदा शोभती है वे तीनों लोक में पूजनीय होते हैं ॥७७॥

विष्णुपुराणे व्यासवाक्यं शुकं प्रति

अवशेनापि यन्नाम्नि कीर्तिते सर्वपातकैः ।

पुमान्विमुच्यते सद्यः सिंहत्रस्ता मृगा इव ॥७८॥

विष्णु पुरान में श्रीवेदव्यास जी का वचन शुकदेवजी से। विवश होके भी जो श्रीरामनाम कीर्त्तन कलियुग में करते हैं सो भी सब पाप से छूटके परमपद जाते हैं उनके सम्पूर्ण पाप कैसे भाग जाते हैं जैसे सिंह के डर से मृगगन भाग जाते हैं। तैसे श्रीरामनाम के भय से सब पाप ताप दूरभाग जाते हैं यह वचन श्रीपराशर जी का भी है मैत्रेय मुनि से ७८॥

ध्यायन्कृते यजन्यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरेऽर्चयन्।
यदाप्नोति तदाप्नोति कलौ श्रीरामकीर्त्तनात् ॥७९॥

सतयुग में ध्यान करिके कृतार्थ होते थे, तथा यज्ञ करिके त्रेतायुग में तरते थे, तैसे ही द्वापर युग में श्रीसीताराम पूजा से कृतार्थ होते थे और कलियुग में श्रीरामनाम कीर्त्तन स्मरन से तीनों युगका फल प्राप्त होता है सन्देह बिना श्रम रहित ७९

तत्रैव श्रीसनत्कुमार वाक्यं वशिष्ठ प्रति

प्रसङ्गेनापि श्रीरामनाम नित्यं वदन्ति ये।
ते कृतार्था मुनि श्रेष्ठ सर्वदोषोद्गतास्सदा ॥८०॥

उसी पुरान में श्रीसनत्कुमार जी श्रीवशिष्ठ जी से कहते हैं कोऊ सम्बन्ध प्रसंग धनादिक पापके जो जन नाम उच्चारन करते हैं सो कृतार्थ होते हैं। सब पाप ताप रहित होय के हे मुनि श्रेष्ठ! ८०॥

दृष्टं श्रुतं मया सर्वं यत्किञ्चित्सारमुत्तमम्।
परन्तु रामनामैकवैभवं तु परात्परम् ॥८१॥

हमने समस्त वेद का जो उत्तमसार था सो देखा सुना विचारा भलीभाँति से परन्तु सबसे श्रेष्ठ सर्वोपरि उत्तम श्रीरामनाम का ऐश्वर्य प्रताप देख पड़ा और सब सामान्य ही जानि पड़े ८१॥

तत्रैव श्रीविरञ्चिवाक्यं मरीचिं प्रति

केचिद्यज्ञादिकं कर्म केचिज्ज्ञानादिसाधनम् ।
कुर्वन्ति नामविज्ञान विहीना मानवा भुवि ॥८२॥

उसी थलमें श्रीब्रह्माजी का वचन मरीचि मुनि सेहै कोउ यज्ञादि कर्मकरते हैं कोउ ज्ञानादि साधनन को, करते हैं सो सब श्रीरामनाम परात्पर विज्ञान अनुभव से रहितहै अभागीहैं भूमि के भार हैं ॥८२॥

तत्रयोगरताः केचिद् केचिद् ध्यान विमोहिताः ।
जपे केचित्तु क्लिश्यन्ति नैव जानन्ति तारकम् ॥८३

कोई योग में रत है कोई ध्यान में विमोहित है यहाँ श्रीराम भिन्न योगादि सम्बन्ध समुझना। कोई कोई नाम मंत्र तंत्रादिकन अनुसार जप करते हैं नाना देवतन का। परन्तु श्रीरामनाम तारकको नहीं जानते जिससे कृतार्थ होय बड़े अभागी हैं ॥८३॥

अहं च शङ्करो विष्णुस्तथा सर्वे दिवौकसः ।
रामनाम प्रभावेण सम्प्राप्ता सिद्धिमुत्तमाम् ॥८४॥

हम और महादेव तथा विष्णु समेत सब देवतन को श्रीराम नाम प्रभावसे सकल सिद्धि प्राप्त परमोत्तम भई है और उपाय से नहीं ॥८४॥

निर्वर्णं रामनामेदं वर्णानां कारणं परम् ।
ये स्मरन्ति सदा भक्त्या ते पूज्या भुवनत्रये ॥८५॥

श्रीरामनाम बरन से रहित अर्द्ध मात्रा रेफ बिंदु रूप है और सब बरनन के कारन हैं। ऐसे श्रीराम परमेश्वरको जो भक्ति समेत जप करते हैं ते तीनों लोक में पूजनीय होते हैं ॥८५॥

भविष्योत्तरपुराणे श्रीनारायणवाक्यं लक्ष्मीं प्रति

भजस्व कमले नित्यं नाम सर्वेशपूजितम् ।

रामेतिमधुरं साक्षान्मया संकीर्त्यते हृदि ॥८६॥

भविष्योत्तर पुरान में श्रीनारायण जी का वचन लक्ष्मीजी से है विचार करके देखो श्रीरामनाम महिमा अपरम्पार है श्रीनारायनादिक ईश्वर श्रीरामनाम का प्रताप गावत है । अपर कीट पतंगन की कहा कथा है—

बड़भागी रागी रसिक ज्ञान ध्यान रस लीन ।
भजे जानकी जानि निज, नाम महा रस पीन ॥१॥

हे लक्ष्मि ! श्रीरामनाम से सदा प्रेम करो, जप करो, श्रीरामनाम सब ईश्वरन करिके पूजित है और हम भी रामनाम महा मधुर का जप सदा हृदय में करते रहते हैं ॥८६॥

रामनामात्मकं ग्रंथं श्रवणात्प्राणवल्लभे ।
शुद्धांतःकरणो भूत्वा स गच्छेद्रामसन्निधिम् ॥८७॥

श्रीरामनाममय ग्रंथ श्रवन पठन से हे प्रान वल्लभे ! थोरे दिन में अन्तःकरन शुद्ध होके श्रीराम समीप प्राप्त होत है ॥८७॥

जीवाः कलियुगे घोरा मत्पादविमुखास्सदा ।
भविष्यन्ति प्रिये सत्यं रामनामविनिन्दकाः ॥८८॥

कलियुगी जीव महानीच मेरे चरन से विमुख होहिंगे सो श्रीरामनाम की निंदा करेंगे और झूठे भक्त वैष्णव कहावेंगे ॥८८॥

गमिष्यन्ति दुराचरा निरये नात्र संशयः ।
कथं सुखं भवेद्देवि रामनामबहिर्मुखे ॥८९॥

ऐसे पापी दुराचारी अधम नरककुण्ड में गिरेंगे संशय नहीं है । हे प्रानप्रिये ! श्रीरामनाम विमुखन को सुख काहू भाँति प्राप्त नहीं होत कोऊ काल में सत्य सत्य समुझना ॥८९॥

सर्वेषां साधनानां वै श्रीनामोच्चारणं परम् ।

वदन्ति वेदमर्मज्ञा निमग्ना ज्ञानसागरे ॥६०॥

जेते साधन हैं फलस्वरूप तिन सबन में श्रीरामनाम शिरोमनि है यह बात वेदविज्ञ सब कहते हैं। जो ज्ञान के सागर में निमग्न कहिये डूबे रहते हैं श्रीनामावलम्ब सर्वोपरि है। इनसे भिन्न जो अन्य साधन हैं सो केवल श्रमदायक हैं ताते सभी आशा त्यागि के श्रीराम युगल चरन में प्रेम करो ॥६०॥

यत्प्रभावान्मया नित्यं परमानन्ददायकम्।
रूपं रसमयं दिव्यं दृष्टं श्रीजानकीपतेः ॥९१॥

जिनके प्रभाव ते हम नित्य एक रस परमानन्द रस स्वरूप सर्वोपरि श्रीजानकीबर का दर्शन पाया सर्वोपरि श्रीरामनाम है ॥६१॥

तत्रैव नारदवाक्यं भरद्वाज प्रति

योगादिसाधने क्लेशं दुस्तरं सर्वथा मुने।
अतस्सौलभ्यसन्मार्गं संगच्छेन्नाम संस्मरन् ॥६२॥

उसी ठौर श्रीनारद जू का वचन भरद्वाज मुनि के प्रति है योगादिक साधन महादुस्तर दुर्गम तिनमें बिना बूझे प्रेमी कष्ट करते हैं। जो विवेकी है सो सुलभ मार्ग में प्रीति करे, अपना भला विचारि के ॥६२॥

अनायासेन सर्वस्वं दुर्लभं मुनिसत्तम।
प्रभावाद्रामनाम्नस्तु लभते रूपमद्भुतम् ॥९३॥

बिना मेहनतके सब सुख विभूति सब प्रकार से लाभ होता है श्रीरामनाम के प्रभाव से, श्रीजानकीवर का परात्पर स्वरूप साक्षात् हो जाता है ॥६३॥

श्रीनारदीयपुराणे सूतवाक्यं शौनकं प्रति

भयं भयानामपहारिणिस्थिते परात्परे नाम्नि प्रकाशसंप्र

यस्मिन्स्मृते जन्मशतोद्भवान्यपि
भयानि सर्वाण्य पयान्ति सर्वतः ॥६४॥

श्रीनारदीय पुरान में सूतजी का वचन शौनक मुनि से है। श्रीरामनाम भय समूह के भयदायक है। परात्पर समस्त कल्यान-प्रद हैं जिनके स्मरन के किये कोटिन कल्पन का पाप नाश हो जाता है। हे प्रिय! श्रीरामनाम के उपासक को चाहिये के काहू से भय न करे और किसी से कुछ चाहे नहीं जाते सब ठाँव शक्ति श्रीरामनाम ही की व्यापि रही है! नाम बिना अपर आस यम त्रास का कारण है ॥६४॥

आयासः स्मरणेकोऽस्तिस्मृतो यच्छति शोभनम् ।
पापक्षयश्च भवति स्मरतां तदहर्निशनम् ॥६५॥

श्रीरामनाम के स्मरण में श्रम कुछ भी नहीं है औ नफा अनन्त प्रकार का है जो दिन रात स्मरण करते हैं उनके निकट पाप परिताप आ नहीं सकते हैं श्रीरामनाम प्रताप से डरते हैं ॥६५॥

प्रातर्निशि तथा सन्ध्यामध्यान्हादिषु संस्मरन् ।
श्रीमद्रामं समाप्नोति सद्यःपापक्षयो नरः ॥९६॥

प्रातःकाल रात्रिको सायंकाल मध्यान्ह समय चाहे जब रुचि होय श्रीरामनाम स्मरन से शीघ्र पाप क्षय होय के श्रीराम सुख धाम को प्राप्त होत है संशय बिना ॥६६॥

रामसंस्मरणाच्छीघ्रं समस्तक्लेशसंक्षयः ।
मुक्तिं प्रयाति विप्रेन्द्र तस्य विघ्नो न बर्धते ॥९७॥

श्रीरामनाम स्मरन से सब क्लेश अविद्यादिक नाश हो जाते हैं। ताके पीछे परम मोक्ष पावतेहैं वाकी कोई विघ्न वाधा नहीं करि सकत है ॥६७॥

श्रीनारद वाक्यं व्यासं प्रति

सर्वेषां साधनानां च संदृष्टं वैभवं मया।
परन्तु नाममाहात्म्यकलां नार्हंति षोडशीम् ॥९८॥

तिसही ठौर श्रीनारद जू का वचन व्यास जी से है–सम्पूर्ण साधनका ऐश्वर्य हमने भलीभांति विचार किया परन्तु श्रीरामनाम महात्म्यकी कला किंचित् सम नहीं होसके, सर्वोपरि श्रीनामपरत्व है। अनन्तकला श्रीरामनामकीहैतिसमें एककला करिके सबसाधन व्रत तीर्थ नेम, तप, यज्ञ, ज्ञान, वैराग्य, योगादिकन में सामर्थ समुझो ९८॥

भवताऽपि परिज्ञातं सर्ववेदार्थसंग्रहम्।
नाम्नः परं कच्चित्तत्वं दृष्टं सत्यं वदस्ववै ॥९९॥

दोहा

रामनाम रसायन पान करु, परिहरि अपर भरोस।
युगलानन्य बिकार बन, बीच न करु परितोस ॥१॥

आप भी ईशांश है समस्त वेद सिद्धांत देखा है, जो कहीं श्रुति संहिता में नामते श्रेष्ठतर तत्त्व देखा होय तौ कहिये अभिप्राय यह है कि कहीं न देखा होयगा जातें है भी नहीं ९९॥

बहुधाऽपि मया पूर्वं कृतं यत्नं महामुने।
नैव प्राप्तं परानन्दसागरं जन्मकोटिभिः ॥१००॥

हे व्यास जी! परमानन्द प्राप्त के निमित्त प्रथम हमने भी हजारों उपाय श्रम समेत किया परन्तु न पाया बिना श्रीरामनाम शरन भये ॥१००

यावच्छ्रीरामनाम्नस्तु प्रभावं वै परात्परम्।
नाभ्यस्तंहृदयेब्रह्मन् तावन्नानार्थ निश्चयम् ॥१०१॥

जब तक श्रीरामनाम को परात्पर प्रभाव मनमें सुदृढ़ अभ्यास नहीं कियो तब ताईं नाना साधनमें निश्चय करि रह्यो है ॥१०१॥

श्रीमद्रामस्य सन्नाम्नि यस्य स्यान्निश्चला रतिः ।
स्वप्नेऽपि न भवेदन्यसाधने रुचिर्निष्फला ॥१०२॥

जाके प्रीति श्रीरामनाम सत्स्वरूप में निश्चय हैं ताकी रुचि सपने में हूँ अन्य उपायन में नाहीं होत है निष्फल जानिके सांच ही मानना ॥१०२॥

शिवपुराणे श्रीशंकर वाक्यं नारदं प्रति

सीतया सहितं रामनाम जाप्यं प्रयत्नतः ।
इदमेव परं प्रेमकारणं संशयं बिना ॥१०३॥

शिवपुराण में श्रीशङ्कर जू का वचन श्रीनारद प्रति है सुनो गुनो सावधानता धारिके—हे नारद मुनि ! रामनाम का जप श्रीसीता सुधा सदन नाम समेत करना चाहिये । श्रीजानकी नाम सहित श्रीरामनाम परम प्रेम दायक है संशय विना ! जैसे राका बिना चन्द्रमा यथार्थ सुख शीतलता नहीं देत है श्री सीता नाम समेत जो रामनाम रटते हैं तिनका सब मनोरथ शीघ्र सिद्ध हो जाता है ताते युगल नाम जपना सार है ॥१०३॥

सकृदुच्चारणादेव मुक्तिमायाति निश्चितम् ।
न जानेऽहं शतादीनां फलं वेदैरगोचरम् ॥१०४॥

एक बार उच्चारन किये मोक्ष प्राप्त होता है, निश्चय समेत जानों सैकड़ों बार उच्चारन का फल हम नहीं जानते और वेद भी नहीं जानते हैं अभिप्राय यह कि कामना त्यागि के नाम जपते जाय भाव बढ़ाय के, फल की चाह करना व्यर्थ है मजूरपना हो जाता है ॥१०४॥

यन्नाम सततं ध्यात्वाऽविनाशिवं परं मुने ।
प्राप्तं नाम्नैव सत्यं च सुगोप्यं कथितं मया ॥१ ५॥

जौ न श्रीरामनाम जप के हम अविनाशी पद को प्राप्त भये,

हे मुनीश्वर जू! ऐसो श्रीरामनाम का प्रताप गुप्त सो तुमको अधिकारी जानके हमने प्रगट ही कह दिया ॥१०५॥

श्रीरामनाम सकलेश्वरमादिदेवं
धन्या जना भुवितले सततं स्मरन्ति।
तेषां भवेत्परममुक्तिप्रयत्नतस्तथा
श्रीरामभक्तिरचला विमला प्रसाददा ॥१०६॥

श्रीरामनाम सब ईश्वरन को ईश्वर है आदिदेव है ऐसे श्रीरामनाम जो जो जपते हैं सो भूमि तथा सब लोकन में धन्य हैं। तिन बड़भागिन को मोक्ष बिना श्रम के तथा श्रीरामचन्द्र की पराभक्ति परम प्रसन्नता देने वाली महा निर्मल प्राप्त होत है परन्तु निरन्तर जप करना चाहिये ॥१०६॥

रामनाम सदासेव्यं जप रूपेण नारद।
क्षणार्द्धं नामसंहीनं कालं कालातिदुःखदम् ॥१०७॥

हे नारद जी! श्रीरामनाम की सेवा सदा करना उचित है नाम का जप सोई सेवा है। नाम पूजा में कुछ सामग्री भी न चाहिये श्रीरामनाम से रहित जो काल व्यतीत होता है आधा क्षण भी सो महाकाल से भी दुखदायक है। अभिप्राय यह है के नाम का विस्मरन सोई अनुरागीजन मौत मानते हैं ॥१०७॥

श्रीमद्भागवते शुकदेव वाक्यं परिक्षितम् प्रति

आपन्नः संसृतिं घोरां यन्नाम विवशो गृणन्।
ततः सद्यो विमुच्येत यद्बिभेति स्वयं भयम् ॥१०८॥

श्रीमद्भागवत में शुकदेव जी का वचन श्रीपरीक्षित राजा से है—महा भयानक संसार दुःख से समेत होय और व समय श्रीरामनाम को विवश होय के उच्चारन करे तो शीघ्र ही क्लेश

से छूट जाय जाते श्रीरामनाम से भय भी भय पावत है ॥१०८॥

कलिं सभाजयन्त्यार्या गुणज्ञाः सारभागिनः ।
यत्र संकीर्त्तनेनैव सर्वस्वार्थोऽभिलभ्यते ॥१०९॥

कलियुग की प्रशंसा सब महात्मा गुनग्राही करते हैं जौन कलिकाल में केवल नामोच्चारन से सब सुख स्वारथ का लाभ होत है ताते उत्तमयुग है ॥१०९॥

अज्ञानादथवाज्ञानादुत्तमश्लोकनाम यत् ।
संकीर्त्तितमघः पुंसां दहत्येधो यथाऽनलः ॥११०॥

अज्ञान अथवा ज्ञान समेत श्रीरामनाम का स्मरन करते हैं तिनके सब पाप नाश हो जाते हैं जैसे मातादिकन को अग्नि जलाय देत है ॥११०॥

ब्रह्महा पितृहा गोघ्नो मातृहाऽऽचार्यहाघवान् ।
श्वादः पुल्कसकोवाऽपि शुद्धेरन् यस्य कीर्त्तनात्॥१११

ब्रह्मघाती, माता मारन हारो, गो हिंसक, पिता घाती भी कृतार्थ होते हैं पाप रहित होय के श्रीरामनाम उच्चारन प्रताप से। चांडाल पुल्कसादि महानीच जाति सोऊ शुद्ध हो जाते हैं श्रीराम नाम कीर्त्तन से। ताते सब साधन की आशा त्यागि के नाम रटो ॥१११॥

नातः परं कर्म निबन्धकृन्तनं
मुमुक्षूणां तीर्थपदानुकीर्त्तनात् ।
न यत्पुनः कर्म सुसज्जते मनो
रजस्तमोभ्यां कलिलं यदन्यथा ॥११२॥

श्रीरामनाम उच्चारन समान और कर्म बन्धन को काटने में समर्थ कोई नहीं है मुक्ति चाहने वालन को। श्रीरामचन्द्र जिनके

चरन में अनन्त तीर्थ बसते हैं जिनका नाम जपना चाहिये। श्रीनाम जपसे जो मन निर्मल होता है रजोगुन तमोगुन से युक्त फेर नहीं होता है और उपाय से कुछ दिन शांत रहत है पुनः अपने स्वभाव को ग्रहन करता है। ताते श्रीरामनाम ही जपनो उचित है ॥११२॥

एवं व्रतःस्वप्रियनामकीर्त्या जातानुरागोद्रुतचित्त उच्चैः।
हसत्यथोरोदिति रौति गाय-
त्युन्मादवन्नृत्यति लोकवाह्याः ॥११३॥

या रीति से प्रानप्रिय श्रीरामनाम को उच्चारन करते २ प्रेम लच्छना भक्ति प्रगट होती है, तिनका लच्छन सुनो–कबहूँ हँसता, कबहूँ रोवता है, कबहूँ उच्चस्वर से गावता है, नाचता है लोक से बाहर बाकी चेष्टा हो जाती है। संयोग वियोग में नाना रंग होत है नाम कृपा से सब सुलभ है ॥११३॥

यथागदं वीर्यतममुपयुक्तं यदृच्छया।
अजानतोऽप्यात्मगुणं कुर्यान्मंत्रोऽप्युदाहृतः ॥११४॥

जैसे शक्तिमान औषधि बिना जाने भी ग्रहन करे तौ अपना गुन अवश्यमेव करत है प्रसिद्ध सुधा विषादिकन को देख लेवो। ऐसे ही श्रीराम बिना ज्ञान के संसार दुख मिटावते हैं सत्य जाननो उचित है ॥११४॥

मार्कण्डेयपुराणे श्रीव्यास वाक्यं स्वशिष्यान्प्रति

धर्मानशेषसंशुद्धान्सेवन्ते ये द्विजोत्तमः।
तेभ्योऽनन्तगुणं प्रोक्तं श्रेष्ठं श्रीनामकीर्त्तनम् ॥११५॥

जो ब्राह्मण श्रेष्ठ सब सम्पूर्ण शुद्ध धर्मन को सेवते हैं और जौन फल पावते हैं तिससे कोटि गुन से अधिक फल श्रीरामनाम कीर्त्तन से प्राप्त होता है सत्य जानो ॥११५॥

यस्यानुग्रहतो नित्यं परमानन्दसागरम् ॥
रूपं श्रीरामचन्द्रस्य सुलभं भवति ध्रुवम् ॥११६॥

जौन श्रीरामनाम के अनुग्रह से परमानन्द सागर श्रीराम-रूप साक्षात् अत्यन्त सुलभ हो जाता है एक सा हृदय में बना रहता है ॥११६॥

वेदानां सारसिद्धांतं सर्वसौख्यैककारणम् ।
रामनाम परं ब्रह्म सर्वेषां प्रमदायकम् ॥११७॥

वेदन का सार सिद्धान्त सर्व सुख का कारन नाम सुखधाम है श्रीराम महा प्रेमदायक है ॥११७॥

तस्मात्सर्वात्मना रामनाममाङ्गल्यकारकम् ।
भजध्वं सावधानेन त्यक्त्वा सर्वदुराग्रहान् ॥११८॥

ताते सब प्रकार से श्रीरामनाम महामङ्गलप्रद भजन करो समस्त दुराग्रह बाद विवाद नाना मतन का त्यागि के। याही में कुशल अमल पावोगे। श्रीरामनाम सम्बन्ध बिना जीव किसी रीति से कृतार्थ नहीं हो सकता है ॥११८॥

नित्यं नैमित्तिकं सर्वं कृतं तेन महात्मना ।
येन ध्यातं परं प्राप्यं नाम निर्वाणदायकम् ॥११९॥

इह वचन मार्कण्डेय पुरान का है श्रीवेदव्यास जी ने शिष्यन को उपदेश किया है। देखो आंख खोलि के कैसा माहात्म्य श्रीरामनाम का है जाको समस्त मुनीश्वर बारम्बार श्रवन मनन कथन किया करते हैं अकथ कथा नाम महाराज की है बिना जाने जीव पीव विमुख नाना मतन में उरझते हैं हे मेरे मन ! सर्व संकल्प रहित होय के केवल नाम पारायन हो जावो नित्य कर्म जो संध्या बन्दन, बलिवैश्वादिक नैमित्त जो श्राद्धा-

दिक धर्म शास्त्र के अनुसार, तिस महात्मा ने सब शुभाचरन किया। उनको कुछ करने को रहि न गया जिन्होंने श्रीराम परम मोक्षदाता का ध्यान विज्ञान समेत जप किया सब प्रकार प्राप्त होने योग्य नाम ही है जिनको श्रीरामनाम का ज्ञान है उनको अनन्त चमत्कार प्रत्यक्ष है बाकी विश्वास हीन लोगों का भी पाप नाश हो जाता है धीरे धीरे विश्वास विज्ञान पायके परमानन्द पावेंगे सही। श्रीनाम का जप निष्फल नहीं होता है॥११६॥

जिह्वा सुधामयी तस्य यस्य नामामृते रुचिः ।

कृतकृत्यस्स एव स्यात सर्वदोषस्यदाहकः ॥१२ ॥

जौन नाम जपते हैं तिनकी रसना सुधा सहित हो जाती है जाते श्रीनाम महापियूष सागर है। कृतार्थ हो जाता है जापक सब दोष रहित होय के, पाप उनके जल जाते हैं ॥१२०॥

तत्रैव व्यासदेव वाक्यं सूतं प्रति

रामनाम परं गुह्यं सर्ववेदान्तवन्दितम् ।

ये रसज्ञा महात्मानस्ते जानन्ति परेश्वरम् ॥१२१॥

उसी ठौर श्रीव्यासजी सूतजी से कहते हैं—श्रीरामनाम महागुप्त सब वेदान्तन करिके वंन्दित है। रसज्ञ महात्मा भेद जानते हैं परमेश्वर के रूप नाम का ॥१२१॥

नामस्मरणनिष्ठानां निर्विकल्पैकचेतसाम् ।

किं दुर्लभं त्रिलोकेषु तेषां सत्यं वदाम्यहम् ॥१२२॥

जो नाम स्मरननिष्ठ हैं और जिनका चित्त सब कल्पनाओं से अतीत है ऐसे महात्मन को तीनों लोक का पदारथ दुर्लभ नहीं सत्य सत्य हम कहते हैं ॥१२२॥

अज्ञानप्रभवं सर्वं जगत्स्थावरजंगमम् ।

रामनामप्रभावेण विनाशो जायतेध्रुवम् ॥१२३॥

सब स्थावर जंगम कीट पतंगादिक नाना प्रकार की जो सृष्टि देख पड़ती है सो परमात्मा स्वरूप के जाने बिना नजर आती है। जिस समय श्रीरामनाम का जप सनेह समेत यह जीव यथार्थ करने लगता है तब अन्तःकरन शुद्ध हो जाता है। उस महात्मा को सर्वत्र परिपूर्ण परंब्रह्म श्रीरामचन्द्र स्वामी दृष्टि पड़ते हैं। नानात्व विनाश हो जाता है ॥१२३।

भजस्व सततं नाम जिह्वायां श्रद्धया सह ।
स्वल्पकेनैव कालेन महामोदः प्रजायते ॥१२४॥

श्रीरामनाम सर्वदा श्रद्धाभक्ति समेत जीभ से उच्चारन करते हैं धन्य तिन सज्जन को महामोद प्रगट होत है संदेह नहीं है ॥१२४॥

धन्यं कुलवरं तस्य यस्मिन् श्रीरामतत्परः।
जायते सत्यसंकल्पःपुत्रः श्रीशेषवल्लभः ॥१२५॥

धन्य सो कुल श्रेष्ठ हैं जिसमें श्रीरामनाम तत्पर पुत्र उत्पन्न होय सत्य संकल्प समेत, सो विष्णु भगवानादिक ईश्वरन के स्वामी रामचन्द्र परात्पर परम पुरुष तिनका परम प्रिय है सोइ सांचा पुत्र है और सब मूत्र सम है। १२५॥

गरुणपुराणे श्रीविष्णुवाक्यं वैनतेय प्रति

श्रीरामराम रामेति ये वदन्त्यपि पापिनः ।
पाप कोटिसहस्रेभ्यस्तेषां संतरण ध्रुवम् ॥१२६॥

गरुड़ पुरान में श्रीव्यास का वचन सूत से तथा भगवान् का वचन गरुड़ जी से है। राम राम राम सब समय जो जप करते हैं यद्यपि पाप समूह तिन्होंने किया है, परन्तु अनन्त पाप तिनके छूट जाते हैं। नाम महाराज के प्रताप से उचित है कि

कुछ दिन सब आशा सिमेटि के श्रीरामनाम में तत्पर हो जाओ तब जानोगे के श्रीरामनाम रटने में कैसा स्वाद है ॥१२६॥

कलौ संकीर्त्तनादेव सर्वपापं व्यपोहति ।
तस्माच्छ्रीरामनाम्नस्तु कार्यं संकीर्त्तनं वरम् ॥१२७॥

कलियुगमें केवल भलीभाँति सर्व आशा. छोड़िके कीर्तन नाम उच्चारन करे तो सब पाप ताप शीघ्र ही नाश हो जाते हैं ताते मतिमान सुजान को चाहिये कि निरन्तर श्रीरामनाम कीर्त्तन करे यह परम श्रेष्ठ धर्म है ॥१२७॥

अग्निपुराणे श्रीमहादेव वाक्यं दुर्वाससं प्रति

न भयं यमदूतानां न भयं रौरवादिकम् ।
न भयं प्रेतराजस्य श्रीमन्नामानुकीर्त्तनात् ॥१२८॥

अग्निपुराण में महादेव जू का वचन दुर्वासा ऋषि से है। हे मुने ! श्रीरामनाम कीर्त्तन करने वालन को यमदूतन का तथा कोटिन प्रकार का नरक तिसका भय स्वप्न में नहीं सत्य जानना श्रीरामनाम का बड़ा प्रताप है ॥१२८॥

यश्चापराह्णे पूर्वाह्णे मध्याह्ने च तथा निशि ।
कायेन मनसा वाचा कृतं पापं दुरात्मना ॥१२९॥

जो पाप प्रातःकाल मध्यान्ह समय तीसरे पहर को रात्रिके समय शरीर वचन मन से जिस दुष्ट बुद्धि ने किया होय सो सब पाप ॥१२९॥

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं च यत् ।
रामनामजपाच्छीघ्रं विनष्टं भवति ध्रुवम् ॥१३०॥

परंब्रह्म परम तेजो मय, परम पवित्र, सर्वेश्वर श्रीरामनाम स्मरण से छनमात्र में विनाश हो जाता है संशय बिना जब

चाहो तब कीर्त्तन करिके देख लेवो। नाम से भिन्न अपर साधन बृथा समुझि पड़ते हैं। रामनाम कलिकाल में सर्व सुखदायक श्रीरघुनाथ स्वरूप है ॥१३०॥

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः स्त्रीशूद्राश्च तथान्त्यजाः ।
यत्र कुत्रानुकुर्वन्तु रामनामानुकीर्त्तनम् ॥१३१॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, चांडाल पर्यन्त सबको नामोच्चारन का अधिकार है। चाहे जौन शुचि अथवा अशुचि ठौर में बैठिके रटन करे नाम को, कृतार्थ हो जायँगे श्रीनाम प्रताप से ॥१३१॥

अग्निपुराणे प्रह्लाद वाक्यं बालकान् प्रति

यत्प्रभावादहं साक्षात्तीर्त्वा घोरभयार्णवम् ।
अनायासेन बाल्येऽपि तस्माच्छ्रीनामकीर्त्तनम् ॥१३२॥

उसी अग्निपुराण में श्रीप्रहलाद जू का वचन है बालकन प्रति चटशाल में जौन श्रीरामनाम के प्रताप शक्ति से पिता का कोप रूप महासमुद्र अपार तिसमे तुम सबके देखते पार हो गये श्रम बिना। ताते हे बालकों ! विश्वास धारिके सकल अविद्यामय पठन का त्याग करिके केवल श्रीरामनाम कीर्त्तन में तत्पर हो जावो ॥१३२॥

कर्त्तव्य सावधानेन त्यक्त्वा सर्वदुराग्रहम् ।
साधनान्यं विहायाशु बुद्ध्वा वैरस्यमात्मनि ॥१३३॥

सावधान होयके सकल मतन का दुराग्रह त्यागि के सकल अनर्थ रूप साधन को त्यागि के श्रीरामनाम रटन करो और सब रस रहित जानिके ॥१३३॥

यद्भुञ्जन्यत्स्वपंस्तिष्ठन् गच्छन्वै जाग्रति स्थितौ ।
कृतवान्पापमद्याहं कायेन मनसा गिरा ॥१३४॥

जौन पाप भोजन करते, बैठते, उठते, चलते, जागते, सोते सकल व्यवहार करने समय शरीर मन, वचन से भया होय लघु वा दीर्घ सर्वथा वेद बिरुद्ध प्रभु पद प्रतिकूल सो समस्त पाप परिताप रूप श्रीरामनाम प्रताप से नाश हो जाता है ॥१३४॥

यत्स्वल्पमपि यत्स्थूलं कुयोनिनरकावहम् ।
तद्यातु प्रशमं सर्वं रामनामानुकीर्त्तनात ॥१३५॥

जौन पाप थोरा अथवा बहुत से बहुत महाघोर नरक तथा शूकरादि योनिन को दाता है, सो समस्त पाप नाश हो जाते हैं शीघ्र ही श्रीरामनाम उच्चारन किये से ॥१३५॥

क्रियाकलापहीनो वा संयुतो वा विशेषतः ।
रामनामानिशं कुर्वन् कीर्त्तनं मुच्यते भयात् ॥१३६॥

चाहे वेदोक्त समस्त क्रिया कर्म करने वाला होय चाहे सब शुभाचरन से रहित होय ऐसा जन भी श्रीरामनाम दिन रात कीर्त्तन करता रहे तौ जन्म मरन रूप भय ते रहित हो जाता है संशय नहीं करना ॥१३६॥

यदीच्छेत्परमां प्रीतिं परमानन्ददायिनी ।
तदा श्रीरामभद्रस्य कार्यं नामानु कीर्त्तनम् ॥१३७॥

जो तुम्हारे मन में इच्छा होय के श्रीनाम की परात्पर प्रीति एक रस स्वबस विहारिनी परमानन्ददायनी हमको शीघ्र प्राप्त होय तौ सकल आशा से रहित होय के श्रीरामनाम महामोद धार कर उच्चारन अनुराग बढ़ाय के किया करो सन्देह बिना परा प्रीति उदय होयगी ॥१३७॥

तत्रैव वैवर्त्तपुराणे शिववाक्यं नारदं प्रति

हनन्ब्राह्मणमत्यन्तं कामतो वा सुरां पिबन् ।

रामनामेत्यहोरात्रं संकीर्त्त्य शुचितामियात्॥१३८॥

ब्रह्म वैवर्त्त पुरान में श्रीशिव जू का वचन श्रीनारद जू से है– जौन नीच हजारों ब्राह्मन का घात करता है औ स्वच्छन्द होय के महा मदिरा पान करता है, तथा समूह पाप का करने वाला है ऐसा नीच भी जो कोई एक दिन रात्रि श्रीनामोच्चारन करे तौ परम पवित्र हो जाय इह सामान्य माहात्म्य है॥१३८॥

अपि विश्वासघाती च तथा ब्राह्मण निन्दकः।
कीर्त्तयेद्रामनामानि पापैव परिभूयते॥१३९॥

जो किसी को कुछ कहे फेर सामर्थ्य रहते हुए न करे सो विश्वासघाती कहाता है; महापाप है। ब्राह्मन की निन्दा करना महापाप है, हत्यादिक अनेक पाप किये होय ऐसा अधम भी सन्त गुरु शरन होय के जो नाम रटन करे तौ शीघ्र ही पाप सागर के पार हो जाय संशय नहीं है॥१३९॥

तत्रैव श्रीनारदवाक्यमम्बरीषं प्रति

ब्रजंस्तिष्ठन्स्वपन्नश्नन्श्वसन्वाक्य प्रपूर्णके।
रामनाम्नस्तु संकीर्त्त्य भक्तियुक्तः परंब्रजेत्॥१४०॥

तिसी ठौर श्रीनारद जू का वचन अम्बरीष महाराज से है। श्रीभक्तराज सुनो— चलते, बैठते, बोलते, खाते, पीते, सोते, बचन के अन्त समय जो सनेह सहित श्रीरामनाम उच्चारन करता है सो श्रीराम के परमधाम में जायगा संशय नहीं है॥१४०॥

कदाचिन्नाम संकीर्त्त्य भक्त्या वा भक्ति वर्जितः।
दहते सर्वपापानि युगान्ताग्निरिवोत्थितः॥१४१॥

श्रीरामनाम चाहे सनेह सहित चाहे सनेह बिना उच्चारन करे उनके पाप जन्मान्तर बिना नाश हो जाते हैं श्रम नहीं होता है,

जैसे महाप्रलय के आग से सब सृष्टि संहार हो जाती है देर नहीं लगता है ॥ १४१ ॥

जन्मांतर सहस्रेषु कोटि जन्मांतरेषु यत ।
रामनाम प्रभावेण पापं निर्यांति तत्क्षणात् ॥१४२॥

चाहे कोटिन जन्म का पाप होय चाहे असंख्य जन्मन का पाप होय श्रीरामनाम उच्चारन प्रताप से नाश हो जाता है क्षण मात्र में विलम्ब नहीं लगता है। श्रीरामनाम उच्चारन एक बार करके फेर पाप न करे तो एक ही बार में मोक्ष हो जाय। बारम्बार उच्चारन करना सदा पाप के संहारार्थक है ॥१४२॥

अभक्ष्यभक्षणात्पापमगम्यगमनाच्च यत् ।
नश्यते नात्र सन्देहो रामनाम जपान्नृप ॥१४३॥

अभक्ष्य जो मांसादिक तामस भोजन तथा राजधान्यादिक औ अगम्य जो परस्त्री तथा वेश्यादिक इन नीचाचरनों के लिये जौन पाप होता है तौन सब पाप श्रीरामनाम उच्चारन कीर्त्तन से नष्ट हो जाता है सन्देह बिना ॥१४३॥

अम्बरीष महाभाग शृणुमद्वचनं वरम् ।
सर्वोपद्रव नाशाय कुरु श्रीरामकीर्त्तनम् ॥१४४॥

हे श्रीराजेश्वर महाभाग्य ! मेरा श्रेष्ठ बचन सावधान होके सुनो-जेतो उपाधि आधि व्याधि असाधि हैं तिन सब के नाश निमित्त श्रीराम परमोद धाम नाम अभिराम कीर्त्तन करो तथा सब प्रजन से करावो ॥१४४॥

तावत्तिष्ठति देहेस्मिन्काल कल्मष संभवम् ।
श्रीनामकीर्त्तनं यावत्कुरुते मानवो नहि ॥१४५॥

शरीर में कलियुग सम्बन्धी पाप तबहीं लौं हैं जब तक श्री

रामनाम न जपे मनुष्य सब छोड़ि के ॥१४५॥

यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥१४६॥

यज्ञ, दान, तप तथा सब कर्म करने में जो न्यूनता हो जाती है सो श्रीरामनाम कीर्त्तन स्मरन प्रताप से संपूर्ण हो जाता है शीघ्र ही ऐसे श्रीराम अच्युत को हम वन्दन करते हैं।।१४६॥

आधयो व्याधयो यस्य स्मरणान्नामकीर्त्तनात् ।
शीघ्रं वैनाशमायान्ति तं वन्दे पुरुषोत्तमम् ॥१४७॥

मन की, शरीर की पीड़ा जिनके नाम कीर्त्तन से शीघ्रतर विनाश हो जाती है ऐसे श्रीराम पुरुषोत्तम को हम वन्दन करते हैं ॥ १४७ ॥

श्रीरामेत्युक्तमात्रेण हेलया कुलवर्द्धन ।
पापौघं विलयं यान्ति दत्तमश्रोत्रिये यथा ॥१४८॥

हे कुलवर्द्धन अम्बरीष जी ! श्रीरामनाम का अनादर करिके भी जो लेता है तिसका सब पाप उसी छन में नाश हो जाता है जैसे बिना वेद पढ़े विप्र को दान दिया शीघ्र व्यर्थ हो जाता है ॥१४८॥

गवामयुतकोटीनां कन्यानामयुतायुतैः ।
तीर्थकोटि सहस्राणां फलं श्रीनामकीर्त्तनम् ॥१४९॥

अनन्तकोटि गोदान, अनन्तकोटि कन्यादान, अनन्तकोटि तीर्थस्नान, दान तथा सकल सुकृत समूह फल एक बार नामोच्चारन के सम नहीं सत्य समुझना ॥१४९॥

रामनामेति सद्भक्त्या येन गीतं महात्मना ।
तेनैव च कृतं सर्वं कृत्यं वै संशयं विना ॥१५०॥

श्रीरामनाम भाव भक्ति समेत जिस सज्जन ने कीर्त्तन किया तिन्होंने सब शुभाचरन कर लिया यामें संशय नहीं है ॥१५०॥

बसन्ति यानि तीर्थानि पावनानि महीतले।
तानि सर्वाणि नाम्नस्तु कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥१५१

जेतने तीर्थ अनन्त लोकन में विराजमान हैं सो सब श्री रामनाम की सोरहीं कला की पवित्रता को पहुँच नहीं सकते हैं काहू भाँति से, श्रीरामनाम का बड़ा प्रभाव है ॥१५१॥

रामनाम समं चान्यत्साधनं प्रवदन्ति ये।
ते चाण्डालसमास्सर्वे सदा रौरववासिनः ॥१५२॥

श्रीरामनाम के सम जौन नीच और साधन उपाय कथन करता है सो महाचाण्डाल है, अबश्यमेव महाघोर नरक चौरासी लाख योनि के दुख को भोगेगा संशय नहीं है ॥१५२॥

रामनामाशयं दिव्यं ये जानन्ति समादरात्।
ते कृतार्थाः कलौ राजन्सत्यंसत्यं वदाम्यहम्॥१५३

श्रीरामनाम के प्रताप गुन वैभव को जो भली भांति अभिप्राय समेत जानते हैं सनेह सत्कार समेत सर्वदा सो महाघोर कलियुग में भी कृतार्थ रूप हैं सत्य-सत्य हम कहते हैं ॥१५३॥

दृष्टं नामात्मकं विश्वं मया विज्ञान चक्षुषा।
वाङ्मनोगोचरातीतं निर्विकल्पं प्रमोददम्॥१५४॥

हमने सब बिश्व को श्रीरामनाममय भली भांति विज्ञान नेत्र से देखि लिया है श्रीरामनाम मन वचन बुद्धि सर्व करनन से गोचर नहीं है। सकल कल्पनान से अतीत है महाप्रमोद दायक है ॥१५४॥

ब्रह्मपुराणे श्रीब्रह्मा वाक्यं नारदं प्रति

इदमेव हि माङ्गल्यमिदमेव धनागमः ।
जीवितस्य फलञ्चैव रामनामानुकीर्त्तनम् ॥१५५॥

ब्रह्मपुरान में श्रीविरंचि वचन नारदजी से है—श्रीरामनामोच्चारन ही परम मङ्गल रूप है । तथा महाश्रेष्ठ धन का आगम है औ परम जीवन का फल श्रीरामनाम कीर्त्तन है इन बिना सब सुख बृथा है ॥१५५॥

प्रमादादपि संस्पृष्टो यथाऽनलकणो दहेत् ।
तथौष्ठपुट संस्पृष्टं रामनामदहेदघम् ॥१५६॥

भूलि के भी जो आग के कनिका का स्पर्श करता है तिनका अङ्ग जल जाता है ऐसे ही श्रीरामनाम को काहू भांति ओठ का रसना का स्पर्श हो जाय तो सब पाप नाश ही कर देवे यह सिद्धान्त है ।१५६॥

हत्याऽयुतं पानसहस्रमुग्र गुर्वङ्गनाकोटि निषेवनञ्च ।
स्तेनान्यसंख्यानि च पातकानि
श्रीरामनाम्ना निहतानि सद्यः ॥१५७॥

हजारों हत्या हजारों प्रकार के मद का पान श्रीगुरु पत्नी पर कुदृष्टि तथा सोनादिकन का चोरी महापाप है, ऐसे २ अनन्त पाप च्णमात्र में श्रीनामोच्चारन से नाश हो जाते हैं ॥१५७॥

निर्विकारं निरालम्बं निर्वैरञ्च निरञ्जनम् ।
भज श्रीरामनामेदं सर्वेश्वर प्रकाशकम् ॥१५८॥

श्रीरामनाम जन्मादिक विकारन से रहित शुद्ध मायातीत काहू के वैरी नहीं है । श्रीरामनाम जीव के कृतार्थ करने में किसी साधन ईश्वर का अवलम्ब नहीं लेते हैं । श्रीराम परात्परेश्वर स्वरूप को साचात नामानुरागी के भीतर बाहर प्रकाश करि

देते हैं ऐसे करुनासागर श्रीरामनाम को निरन्तर रटत करना परम श्रेष्ठ धर्म है ॥१५८॥

श्रुत्वा श्रीरामनाम्नस्तु प्रभावं वै परात्परम् ।
सत्यं यो नाभिजानाति द्रष्टव्यं तन्मुखं नहि ॥१५९

श्रीरामनाम को परात्पर प्रताप श्रवन करिके जो अपने हृदय में नहीं सांच मानता है तौन नीच अपराधी का मुख सपने में न देखना चाहिये, चाहे जौन होय ॥१५९॥

विज्ञानं परमं गुह्यमिदमेव महामुने ।
वाह्यं वाऽभ्यन्तरं नाम सततं चिन्तनं वरम् ॥१६०॥

हे मुनीश्वर जी ! परम विज्ञान समाधि भक्तिसार यही है के भीतर बाहर से अखण्ड श्रीरामनाम उच्चारन करना, भाव बढ़ाय के श्रीरामनाम बिना अन्य साधनन में चित्त न देना, भूलि के ॥१६०॥

कूर्मपुराणे श्रीशङ्कर वाक्यं शिवां प्रति

गोप्याद्गोप्यतमं भद्रे सर्वस्वं जीवनं मम ।
श्रीरामनाम सर्वेशमद्भुतं भुक्ति मुक्तिदम् ॥१६१

कूर्म्म पुरान में श्री महादेवजी का बचन श्रीपार्वती जी से है—हे कल्यान स्वरूपे! श्रीरामनाम महा गोप्य से गोप्य है । अपने सुलभ गुन सम्बन्ध से प्रगट जीवोद्धारक हेतु है औ हमारे तो सर्वस्व जीवन है औ श्रीरामनाम सब के स्वामी हैं । महाभुक्ति मुक्ति भक्ति शक्ति सर्व सुख दाता है ॥१६१॥

जपस्व सततं रामनाम सर्वेश्वर प्रियम् ।
नियामकानां सर्वेषां कारणं प्रेरकं परम् ॥१६२॥

हे प्रिये ! सर्वदा श्रीरामनाम कीर्त्तन स्मरन करो श्रीरामनाम सकल ईश्वरन को परम प्रिय हैं । सकल प्रेरकन के परम प्रेरक

हैं, सब कारणन के महाकारण हैं ॥१६२॥

रामनामैव सद्विद्ये सत्यं वच्मि वरानने ।
समाहितेन मनसा कीर्तनीयस्सदा बुधैः ॥१६३॥

हे समीचीन विद्या स्वरूपे ! सावधान होयके श्रीरामनामोच्चारन करना विवेकिन को चाहिये, सत्य सत्य हम कहते हैं ॥ १६३

रामनामात्मकं तत्त्वं सतां जीवातुरं महत् ।
निन्दितस्सर्वलोकेषु रामनाम बहिर्मुखः ॥१६४॥

श्रीरामनाममय सिद्धान्त सब सन्तन को जीवन है । जौन नीच श्रीराम से विमुख है, तौन सकल लोकन में निन्दित है ॥१६४॥

लौकिकी वैदिकी या या क्रिया सर्वार्थसाधिका ।
ताभ्यः कोटचबुर्दगुणं श्रेष्ठं श्रीनामकीर्त्तनम् ॥१६५

लोक वेद जेती क्रिया फलन को सिद्धि करनहारी हैं तिनसे कोटिन गुन अधिक महाफल प्रदायक श्रीरामनाम है; ताते सावधान होय के सर्वदा श्रीरामनाम जपो ॥१६५॥

धिक्कृतं तमहं मन्ये सततं प्राणवल्लभे ।
यज्जिह्वाग्रे न श्रीरामनाम संराजते सदा॥१६६॥

हे पार्वती ! तिस पर हमारी तथा सब नामानुरागिन की धिक्कार पड़ती है सत्य जानना जिस पापी के जीभ पर तथा श्वांसादिक स्थलन पर श्रीनाम नहीं विराजमान है सो महापापिन का राजा है ॥१६६॥

वामनपुराणे श्रीवामन वाक्यं मुनीन्प्रति

अघौघा वज्रपाताद्या ह्यन्ये दुर्नीत संभवाः ।
स्मरणाद्रामभद्रस्य सद्यो याति क्षयंक्षणात् ॥१६७॥

वामनपुरान में श्रीवामन जी का वचन महामुनिन प्रति है— अघन का समूह तथा वज्रपातादि दोष तथा दुर्भिक्षादिक पीड़ा श्रीरामनाम स्मरन से शीघ्र नाश हो जाता है १६७।

श्रृण्वन्ति ये भक्तपरा मनुष्याः
संकीर्त्त्यमानं भगवन्तमुग्रम्।
ते मुक्तपापाः सुखिनो भवन्ति
यथाऽमृतप्राशन तर्पितास्तु ॥१६८॥

श्रीरामनामोच्चारन तथा श्रीरामनाम गुन कीर्त्तन जो कोई और के मुख से भी सुन लेता है सो सब पाप रहित होय के सुखी होता है जैसे महामृत पीवने से प्रान तृप्त हो जाय ॥१६८॥

परदाररतो वाऽपि परापकृतकारकः।
स शुद्धो मुक्तिमायाति रामनामानुकीर्त्तनात्॥१६९॥

पराई नारी से जो भोग करता होय सदा तथा पराया अपकार करता होय कमर बांध के, सो महानीच भी श्रीरामनामोच्चारन कीर्त्तन से शुद्धता पाय के परम पद जायेगा सन्देह रहित ॥१६९॥

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यस्स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥१७०॥

अपावन होय चाहे पवित्र होय, सर्व शुभ अवस्था ते रहित होय जो श्रीराम राजीवलोचन नाम का स्मरण करे सो भीतर बाहर परम पवित्र हो जाता है श्रीरामनाम प्रताप से ॥१७०॥

मत्स्यपुराणे

सर्वेषां राममन्त्राणां श्रेष्ठं श्रीतारकं परम्।
षडक्षरेमनुसाक्षात्तथा युगमाक्षरं वरम् ॥१७१॥

मत्स्य पुरान में कहा है—सम्पूर्ण श्रीराममन्त्रन में परम श्रेष्ठ स्वबीज पूर्वक षडक्षर तारक मन्त्र है तैसे ही सर्वाभिलाष प्रद श्रीराम दो बरन मनहरन है भेद नहीं है ॥१७१

येन ध्यातं श्रुतं गीतं रामनामेष्टदं महत् ।
कृतं तेनैव सत्कृत्यं वेदोदितमखण्डितम् ॥१७२॥

जिस बड़भागी ने श्रीराम को ध्याया गाया सुना तिसने सब मनोरथ अपना सफल किया तथा वेदानुकूल सब शुभाचरन किया भली भाँति से ॥१७२॥

ध्येयं ज्ञेयं परं पेयं रामनामाक्षरं मुने ।
सर्व सिद्धान्त सारेदं सौख्यं सौभाग्य कारणम् ॥१७३

ध्यान करिबे योग्य तथा जप द्वारे रसपान करिबे योग्य श्रीरामनाम ही है परम सिद्धान्त सकल सौभाग्य दायक श्रीरामनाम है । १७३॥

नामैव परमं ज्ञानं ध्यानं योगं तथा रतिम् ।
विज्ञानं परमं गुह्यं रामनामैव केवलम् ॥१७४॥

श्रीरामनाम ही परम ज्ञान योग भक्ति विज्ञान परम उपासना सब नाम ही है अभिप्राय इह है के श्रीरामनाम जपे से सब सुलभ है ॥१७४।

नाम स्मरण निष्ठानां नामस्मृत्या महाघवान् ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो वाञ्छितार्थं च विन्दति॥१५७॥

जो श्रीरामनाम में परम प्रतीति किये है तिनके स्मरन से महापापी सब पापन को त्याग के अपने मनोरथ को पावेगो यामें सन्देह नहीं श्रीरामनाम जापकन से विशेष सनेह करना चाहिये ॥१७५॥

बाराहपुराणे श्रीशिव वाक्यं शिवाम्प्रति

दैवाच्छूकरशावकेन निहतो म्लेच्छो जराजर्जरो,
हारामेण हतोऽस्मि भूमिपतितो जल्पंस्तनुं त्यक्तवान्।
तीर्णोगोष्पदवद्भवार्णवमहो नाम्नः प्रभावादहो,
किं चित्रं यदि रामनाम रसिकास्ते यान्ति
रामास्पदम् ॥१७६॥

बाराह पुरान में श्रीमहादेव जू का बचन महासिद्धान्तमय श्रीरामनाम परत्व पर है सो सुनो गुनो। एक म्लेच्छ महापापी बैल का व्यापार करते हुए कोऊ महानीच बन में जाय के उतरयो। अतीव बृद्ध रह्यो, अर्द्धरात्रि के समय रोग ग्रसित वन में दिशा के अर्थ गयो। तहां प्रारब्ध योग से शूकर के बच्चा ने वाको ढकेल दियो उह गिरते समय पुकारयो के हमको हराम ने मारयो यह कहिके प्रान त्यागत भयो। महाघोर भवसागर को गौ के खुर समान तरिगयो. तन भरि विलम्ब न लाग्यो, महा-आश्चर्य श्रीरामनाम को प्रताप है। जौन अनुरागी श्रीरामनाम स्नेह सहित लेते हैं तिनका कौन गति कहै। वह तो जीवतेही परम मोक्ष रूप है। यां लोक में यथार्थ नाम परत्व है जाते नाम स्पष्ट नहीं है अजामिल के प्रसङ्ग से महा अन्तर है विचार लेना ॥१७६॥

ध्येयं नित्यमनन्य प्रेमरसिकैः पेयं तथा सादरम्
ज्ञेयं ज्ञानरतात्मभिश्च सुजनैः सम्यक् क्रियाशान्तये।
श्रीमद्रामपरेश नाम सुभगं सर्वाधिपं शर्मदम्
सर्वेषां सुहृदं सुरासुरनुतं ह्यानन्दकन्दं परम्॥१७७॥

अनन्य अनुरागिन करिके ध्यान योग्य तथा परम प्रेमी रसि-

कन करिके पान योग्य तथा परम ज्ञानिन करिके जानिवे योग्य श्रीरामनाम ही हैं । श्रीरामनाम से जपे से सब संसृति प्रद कर्म नाश हो जाते हैं श्रीरामनाम परम सुन्दर, सबके स्वामी, सबके सहायक, सबसे सेवित; महामोद मूल हैं । ऐसा बिचारि के सर्वदा रटन करनो चाहिये ॥१७७॥

निरपेक्षं सदा स्वच्छं सर्वसम्पत्ति साधकम् ।
भजध्वं रामनामेदं महामाङ्गलिकं परम् ॥१७८॥

श्रीरामनाम को कुछ जापक से पत्र पुष्प फल की भी इच्छा नहीं सर्वदा स्वच्छ है सकल सुख सम्पति दाता है । महामङ्गल रूप श्रीरामनाम को सदा भजनो उचित है ॥१७८॥

करुणावारिधिं नाम ह्यपराधनिवारकम् ।
तस्मिन्प्रीतिर्न येषां वै ते महापापिनो नराः॥१७९॥

श्रीरामनाम महाकरुना के सागर सकल अपराध हरनहारे हैं ऐसे श्रीरामनाम में जिनकी सांची प्रीति नहीं है ते महापापी हैं ॥१७९॥

लिङ्गपुराण सूत वाक्यं शौनकं प्रति

रामनामानिशं भक्त्या प्रजप्तव्यं प्रयत्नतः ।
नातः परतरोपायो दृश्यते श्रूयते मुने ॥१८०॥

लिंग पुरान में सूत का वचन शौनक मुनि से है—श्रीराम नाम दिन राति स्नेह समेत सावधान होय के संयम धारि के जपना चाहिये याते और उपाय देख सुन नहीं परत है । हे मुने ! सांच जानना ॥१८०॥

तत्रैव श्रीमहादेव वाक्यं पारवतीं प्रति—

वृथाऽऽलापवदन्व्रीडां येषां नायाति सत्त्वरम् ।
हित्वा श्रीरामनामेदं ते नराः पशवः स्मृताः॥१८१॥

उसी ठौर श्री महादेव जी का वचन पार्वती प्रति है चित्त देय के सुनो—श्रीरामनाम गुनादि छोड़िके और बात बकते जिनको लाज नहीं लागत है सो मनुष्य नहीं है, महाअधम पशु से पशु हैं ।१८१।।

न जाने किं फलं ब्रह्मन् जायते नामकीर्त्तनात् ।
जानाति तच्छिवः साक्षाद्रामानुग्रहतो मुने॥१८२॥

श्रीनाम उच्चारन किये कौन फल प्राप्त होता है हे विप्र ! सो हम नहीं जानते हैं । इस रहस्य का श्रीमहादेवजी श्रीरामानुग्रह से जानते हैं ॥१८२॥

अहो नामामृतालापी जनः सर्वार्थ साधकः ।
धन्याद्धन्यतमोनित्यं सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥१८३

आश्चर्य बड़भागी नाम महामृत जापक है सर्व अर्थ सिद्ध करनहारे धन्यन में महाधन्य है सत्य सत्य हम कहते हैं ॥१८३॥

रामनाम्ना जगत्सर्वं भाषितं सर्वदा द्विज ।
प्रभावं परमं तस्य वचनागोचरं मुने ॥१८५॥

श्रीरामनाम से सकल विश्व प्रकाशित है ऐसे श्रीरामनाम का प्रकाश वचन से अकथ अगोचर है। हे मुने ! नाम जपा करो ॥१८४॥

अलं योगादि संक्लेशैर्ज्ञान विज्ञान साधनः ।
वर्त्तमाने दयासिन्धौ रामनामेश्वरे मुने ॥१८५॥

योग ज्ञान विज्ञानादि साधनन से मन को खींच लेवो सामान्य मानिके, जाते श्रीरामनाम परम करुनासागर प्रगट वर्त्तमान है, काहे को क्लेश पंथ में पचना। श्रीनाम सब ईश्वरन के महाईश्वरन हैं ॥१८५॥

रामात्परतरं नास्ति सर्वेश्वरमनामयम् ।
तस्मात्तन्नाम संलापे यत्नं कुरु मम प्रिये ॥१८६॥

रामनाम ते परे अपर परमेश्वर निरोग असोग कोऊ नहीं है ताते हे प्रिये ! श्रीरामनाम जप ही में श्रम विशेष सावधानता पूर्वक करो ॥१८६॥

चाण्डालादिक जन्तूनामधिकारोऽस्ति वल्लभे ।
श्रीरामनाम मन्त्रेस्मिन् सत्यं सत्यं सदा शिवे।१८७॥

श्रीरामनाम में चांडाल पर्यन्त जीवन का अधिकार है। हे प्रिये ! श्रीरामनाम महामंत्र शिरोमनि है सत्य सत्य हम कहते हैं और मन्त्रन में अधिकार चाहिये ॥१८७॥

यत्प्रभाव लवकांशतः शिवे शिवपदं सुभगं यदवाप्तम्
तद्रतिं विरहिता किल जीवा यान्ति कष्टमतुलं यम-
मादरम् ॥१८८॥

जौन श्रीरामनाम शक्ति लेश से हे पार्वति ! हमको शिव-पद अमर लाभ भया तौन श्रीरामनाम के स्नेह बिना जीव महा खेद उपमा रहित नरकादिक में जायँगे सन्देह नहीं है, नाम विमुखन की यही गति उचित है ॥१८८॥

साकारादगुणाच्चापि रामनाम परं प्रिये ।
गोप्याद्गोप्यतमं वस्तु कृपया संप्रकाशितम् ।१८९॥

हे प्रिये ! साकार निराकार दोनों रूप का प्रकाशक गुप्त से गुप्त श्रीरामनाम है । हम कृपा करिके प्रकाश किया है ॥१८९॥

स्मर्तव्यं तत्सदा रामनाम निर्वाणदायकम् ।
क्षणार्द्धमपि विस्मृत्य याति दुःखालयं जनः॥१९०॥

श्रीरामनाम महामोक्ष दायक सर्वदा स्मरन करिबे योग्य है

छन भर भी त्याग किये जीव दुखागार में डूबि जाता है ॥१६०॥

विष्णुपुराणे व्यासवाक्यं

विष्णोरेकैक नामापि सर्ववेदाधिकं मतम् ।
तादृग्नाम सहस्रेण रामनाम सतां मतम् ॥१६१॥

विष्णु पुरान में श्रीव्यास जी का वचन है—विष्णु भगवान का एक २ नाम सब वेदन में श्रेष्ठ है । तिन विष्णु नामन से अनन्त गुन फलदायक सर्वोपरि श्रीरामनाम है, सत्य सत्य जानना ।१६१॥

श्रीरामेति परंनाम रामस्यैव सनातनम् ।
सहस्रनाम सादृश्यं विष्णोर्नारायणस्य च ॥१६२॥

श्रीराम इह सर्वोपरि नाम श्रीराम द्विभुज सच्चिदानन्द साकेत बिहारी का सर्वदा एकरस है और अवतार ईश्वर निराकारादिकन को नहीं है, विष्णु नारायनादिक अनन्त नाम के सम है ॥१६२॥

रामनाम्नः परं किञ्चित्तत्वं वेदे स्मृतिष्वपि ।
संहितासु पुराणेषु नैव तन्त्रेषु विद्यते ॥१६३॥

श्रीरामनाम से परम तत्व वेद, स्मृति, पुरान, संहितादिकन में नहीं है सत्य जानना ।१६३॥

नाम्नो रामस्य ये तत्त्वं परं प्राहुः कुबुद्धयः ।
राक्षसांस्तान्वि जानीयाद्व्रजेयुर्नरकंध्रुवम् ॥१६४॥

श्रीरामनाम से जो श्रेष्ठ तत्व कहते हैं सो महाकुबुद्धि है जिनको राक्षसाधम जानना चाहिए । सो नीच महाघोर नरक में जायँगे सन्देह नहीं है ॥१६४॥

यज्जिह्वा रघुनाथस्य नामकीर्त्तनमादरात् ।
करोति विपरीता या फणिनो रसना समा ॥१६५॥

जौन श्रीरामनाम उच्चारन वाली है, सोई रसना है, नाम रहित विषधरी सांप के जिह्वा सम है ॥१६५॥

रामेति नाम यच्छ्रोत्रे विश्रम्भाज्जपितो यदि।
करोति पाप सदाहं तूलवह्निकणो यथा ॥१९६॥

श्रीरामनाम जिसके कान में काहू भाँति अनिच्छित भी जो प्राप्त होत है तिसके समस्त पाप सब शीघ्र नाश हो जाते हैं जैसे अग्नि के लगे रुई का पर्वत नाश होजाय ॥१६६॥

तावद्गर्जन्ति पापानि ब्रह्महत्या शतानि च।
यावद्रामं रसनया न गृह्णातीति दुर्मतिः ॥१६७॥

ब्रह्म हत्यादिक पाप तबहीं गर्जते हैं जब तक श्रीरामनाम का ग्रहन मूढ़ मति नहीं करता है, नाम जपो ॥१६७॥

इति श्रीरामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोद निवासे परात्परैश्वर्य्यदायके भाषाटीकायां श्रीरामनामपरत्वप्रकाशिकायां श्रीयुगलानन्यशरणसंगृहीतेष्टादश-पुराणप्रमाणनिरूपणंनाम प्रथमः प्रमोदः ॥१॥

अथोपपुराण वचनानि

वायुपुराणे श्रीशिववाक्यं नारद प्रति

महतस्तपसोमूलं प्रसवः पुण्य सन्ततेः।
जीवितस्य फलस्वादु सदा श्रीरामकीर्त्तनम् ॥१॥

अथोप पुरान वचनानि वायु पुरान में श्रीशङ्कर का वचन नारद प्रति है। हे नारद जी! श्रीरामनाम महाप्रताप के मूल है औ सुकृत समूह संतति के संभव करता है। औ जीवन का फल स्वादुरूप श्रीरामनाम का उच्चारन है। अभिप्राय इह है के विना श्रीनामाराधन किये सब करतूति साधन श्रमदायक है॥१॥

श्रीरामनाम सामर्थ्यं वैभवं शौर्यविक्रमम् ।
न वक्तुं कोपि शक्नोति सत्यं सत्यं च नारद ॥२॥

श्रीरामनाम का सामर्थ्य अघटन घटन शक्ति रूप चाहे अनन्त जीवन को पलमात्र में परम पद दे देवे साधन के बिना, ऐश्वर्य श्रीरामनाम का आश्चर्य है। जिनकी सत्ता विभूति लवलेश पाय के ब्रह्मादिक अनेक ऐश्वर्य सम्पन्न भये हैं। सूरता श्रीरामनाम को आश्चर्य है के अनन्त वैरिन को दलिके अपने भक्तन को सहज ही में परमपद देते हैं, विक्रम शीघ्र प्राप्त होने में है। श्रीरामनाम का सामर्थ्यादिक कौन कहि सकत है सत्य समुझना चाहिये ॥२॥

सततं राम रामेति यस्तु कीर्त्तयते सदा ।
गुरुतल्पशतेनापि सद्य एव प्रमुच्यते ॥३॥

सदा श्रीराम राम राम जो प्रेम आनन्द समेत कीर्तन करते हैं, सो मनुष्य सैकड़ों बार श्रीगुरु पत्नी से विषय किया होय तौ भी कृतारथ हो जाते हैं, श्रीरामनाम प्रभाव से ॥३॥

यातना यमलोकेषु तावदेव भवेन्नृणाम् ।
यावन्न भजते प्रीत्या रामनामपरात्परम् ॥४॥

यातना यमलोक की तबहीं लौं जीवन को प्राप्त होत हैं जबतक सनेह शौक समेत श्रीरामनाम परात्पर का स्मरन कीर्त्तन नहीं करता है। अभिप्राय इह के नाम जपे से सब संकट मिटेगा ॥४॥

सर्वेषामवताराणां कारणं परमाद्भुतम् ।
श्रीमद्रामेति नामैव कथ्यते सद्भिरन्वहम् ॥५॥

समस्त छोटे बड़े अवतारन को कारन परम आश्चर्य रूप

श्रीरामनाम है, सब सनातन श्रुतिन का सिद्धान्त है निरन्तर सन्देह बिना। अभिप्राय इह है के नाम संकीर्तन द्वारे सब अवतार प्रगट होते हैं ॥५॥

यत्र यत्र समुद्धारो दृश्यते श्रूयतेऽथवा।
तत्सर्वं रामनाम्नैव सत्यं सत्यं वचो मम ॥६॥

जहाँ २ जिसका २ उद्धार सुन पड़ता है जौन २ युग में औ देख पड़ता है बाहर भीतर की आँख से, सो सब श्रीराम-नाम से जानना। सत्य सत्य मेरा वचन मानना ॥६॥

रामनामात्मिका वाणी श्रोतव्या सर्वदा बुधैः।
त्यक्त्वा नानार्थविच्छन्दान्वाद विभ्रान्ति मण्डितान् ७

श्रीरामनामरूपी वानी सर्वदा विवेकिन को सुनना उचित है। नानार्थक, विवाद, कथा, इतिहासिक त्यागि के, जाते श्रीरामनाम बिना सब भ्रमदायक वचन है ॥७॥

तथा नृसिंहपुराणे

रामरामेति रामेति सततं संस्मरन्ति ये।
त एव वल्लभास्माकमीश्वराणां च नारद ॥८॥

नृसिंह पुरान में कहा है—श्रीराम राम राम बार-बार स्नेह सहित तीनों समय निरन्तर जौन स्मरन करते हैं, हे नारद ! सोई हमारे परम प्यारे हैं तथा सब ईश्वरन के परम प्रिय हैं ॥८॥

सर्वासां चित्तवृत्तीनां निरोधो जायते ध्रुवम्।
रामनाम प्रभावेण जप्तव्यं सावधानतः ॥९॥

प्रमाण विपर्यय, विकल्प, निद्रा स्मृति, रूप जो पाँच वृत्ति हैं तिन सबका निरोध हो जाता है श्रीरामनाम कीर्तन स्मरन करने से। अभिप्राय इह है के सीतारामनाम ही से समाधि लागत

है याते उचित है के श्रीरामनाम प्रभाव सर्वोपरि विचारि के सावधान समेत जपो ॥९॥

नरका ये नरा नीचा जीवन्तोऽपि मृतोपमाः ।
तेषामपि भवेन्मुक्तिः रामनामानुकीर्त्तनात् ॥१०॥

सो नरक रूप हैं औ जीवते हैं पर मृतक सम हैं जौन मनुष्य तन चिंतामणि की परख नहीं करते हैं ऐसे मलीन मति भी परम मोक्ष को पा जावैं थोरे दिन में जो श्रीरामनाम उच्चारन स्मरन कीर्त्तन करें सब छोड़िके ॥१०॥

तत्रैव श्रीप्रह्लादवाक्यं पितरं प्रति

रामनामजपतांकुतो भयं सर्वतापशमनैकभेषजम् ।
पश्यतात मम गात्र सन्निधौ
पावकोऽपिसलिलायतेऽधुना ॥११॥

ताही ठौर में श्रीप्रहलाद जी का वचन पिता से है—जिस समय हिरण्यकश्यप ने अग्निप्रज्वलित करिके डारि दिया तब श्रीप्रहलाद जी से दैत्य ने कहा कि क्या अवस्था है तब भक्तराज श्रीप्रहलाद जी कहत भये कि हे पिता ! श्रीरामनाम जापक को काहू भाँति भय नहीं होता है सकल रोग की औषधि श्रीरामनाम है। देख लो प्रत्यक्ष कि महा अग्नि ज्वाल मेरे अङ्ग में शीतल जल सम हो गई है ॥११॥

रामनाम प्रभावेण मुच्यते सर्वबन्धनात् ।
तस्मात्त्वमपि दैत्येश यस्यैव शरणं व्रज ॥१२॥

श्रीरामनाम प्रभाव से सब दुःख बन्धन छूट जाता है ताते तुम भी दैत्येश ! श्रीरामनाम के शरण हो जावो ॥१२॥

तत्रैव श्रीनारदवाक्यं याज्ञवल्क्यं प्रति

श्रीरामेति जपन्जन्तुः प्रत्यहं नियतेन्द्रियः ।

सर्वपाप विनिर्मुक्तः सुरवद्भासते नरः ॥१३॥

उसी ठौर श्रीनारदजू का वचन याज्ञवल्क्य मुनि से है—श्रीरामनाम जो जीव जप करते हैं इन्द्रियन को जीति के सो सब पाप से रहित होय के देवतासम भासते हैं मनुष्यपना निवृत्ति हो जाता है ॥१३॥

सौभाग्यं सर्वदा स्वच्छं सहजानन्दमद्भुतम् ।
अवश्यं लभते भक्त्या रामनामानुकीर्त्तनात् ॥१४॥

सुभगता स्वच्छता सहजानन्दतादिक समस्त दिव्य गुन श्रीरामनाम स्नेह समेत उच्चारन किये प्राप्त होत है सत्य जानना ॥१४॥

रामनामरतानारी सुतं सौभाग्यमीप्सितम् ।
भर्त्तुः प्रियत्वं लभते न वैधव्यं कदाचन ॥१५॥

श्रीरामनाम में रति परा प्रीति करने वाली जो नारी शिरोमणि है तिसको सुपुत्र उत्पत्ति होता है तथा सौभाग्य पति की परम प्रसन्नता प्राप्त होती है। विधवापन उसके शीश से विनाश हो जाता है श्रीरामनाम का महाप्रभाव है ॥१५॥

पतिव्रतानां सर्वासां रामनामानुकीर्त्तनम् ।
ऐहिकामुष्मिकं सौख्यदायकं सर्वशो मुने ॥१६॥

जेती पतिव्रता हैं तिन सबको श्रीसीताराम नामोच्चारन का अधिकार अवश्य है इस लोक का तथा परलोक का सुख सौभाग्य सब प्रकार से उनको लाभ होता है श्रीराम सबके साँचे पति हैं ॥१६॥

सीतयासहितं रामनाम येषां परं प्रियम् ।
त एव कृत कृत्याश्च पूज्या सर्व सुरेश्वरैः ॥१७॥

श्रीसीता सहित रामनाम जिनको परम प्रिय लागते हैं हे मुने ! सो सर्वजन कृतार्थ रूप हैं, सब देव शिरोमणि से वंदनीय हैं ॥१७॥

रामनामार्थमध्ये तु साक्षात्सीतापदं प्रियम् ।
विज्ञानागोचरं नित्यं मुने श्रीरामवैभवम् ॥१८॥

श्रीरामनाम के मध्य में साक्षात् श्रीसीता स्वरूप विराजमान है जो श्रीराममंत्र के परम ज्ञाता हैं तिनको यथार्थ श्रीनाम विभूति जानि परत है ॥१८॥

आदौ सीतापदं पुण्यं परमानन्ददायकम् ।
पश्चाच्छ्रीरामनाम्नस्तु कथनं संप्रशस्यते ॥१९॥

चाहिये तो सर्वदा श्रीसीतानाम उच्चारन करना, जो न बने तो भी परमानन्ददायक परम पवित्र श्रीसीताराम श्रद्धा प्रेम सहित प्रथम कहिके तब श्रीरामनाम उच्चारन करे ॥१९॥

युग्मं वर्णं जपेद्यर्हि तदा सीतेति कीर्तयेत् ।
सावकाशे सदा भक्त्या मध्ये मध्ये समादरात् ॥२०॥

युगल वर्ण उच्चारन जब करे तब भी बीच २ में स्नेह सहित श्रीसीतानाम जप करता जाय सदा श्रीसीताराम परस्पर नाम रसिक हैं ॥२०॥

एवं रीत्या स्मरन्नाम रामचन्द्रस्य संततम् ।
षण्मासात्सिद्धिमाप्नोति कलौ विश्वासपूर्वकम् ॥२१॥

या रीति से जो जन श्रीरामनामोच्चारन करते हैं, सदा श्रीराम मंगलमय महाप्रभु का नाम सकल भाँति अभिराम प्रद। तिनको छः महीने में महासिद्धि प्राप्त होती है । कलियुग में थोरे दिनन में प्रभु रीझ जाते हैं विश्वास चाहिये ॥२१॥

सूर्योदये यथा नाशमुपैति ध्वान्तमाशु वै ।
तथैव रामसंस्मरणाद्विनाशं यान्त्युपद्रवाः ॥२२॥

श्रीप्रभाकर के उदय से जैसे महातम तोम शीघ्र ही नाश हो जाते हैं बिलम्ब नहीं लगता है, ऐसे ही श्रीरामनामोच्चारन से काम क्रोधादिक पञ्च विषयादिक उपद्रव बिनाश हो जाते हैं सत्य मानना ॥२२।

दुराचारो महादुष्टो महाघौघ निकेतनः ।
रामनाम स्मरन् भक्त्या विशुद्धो भवति ध्रुवम् ॥२३॥

परनारी वेश्यादिकनमें जो सदा लिप्त हैं, महाहिंसक सकल पापन का घर सो भी श्रीराम स्नेह सहित उच्चारन करे तो निश्चय से परम शुद्ध होयके कृतार्थ हो जाय ॥३२॥

रामनाम प्रभावेण यद्यच्चिन्तयते जनः ।
तत्तदाप्नोति वै तूर्णमभीष्टमति दुर्लभम् ॥२४॥

श्रीरामनाम परम प्रभाव से जो २ मनोरथ दुर्ल्लभ इस जापक को होय, सो सब शीघ्र ही नाना रङ्ग समेत प्राप्त हो जाते हैं संशय नहीं २४॥

सर्वाभीष्टप्रदे नाम्नि प्रीतिर्नैवाभिजायते ।
मुने तस्यापराधानां नियमो नैव विद्यते ॥२५॥

सम्पूर्ण मनोरथ प्रदाता श्रीरामनाम में जिसकी प्रीति साँची नहीं है तिसके अपराध की गिनती कौन कर सकता है ॥२५॥

रामनाम्नि रतिर्नास्ति कुरुते धर्मसंचयम्
तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तं पथिबीजाङ्कुरा इव ॥२६॥

श्रीरामनाम अनुराग बिना सब सुकृत्य संचय करता है तो श्रीनाम बिना सब निष्फल हो जाते हैं नाम समेत सब साधन

सफल हो जाते हैं ॥२६॥

बहुजन्मोग्रपुण्यानां फलं नामानुकीर्त्तनम् ।
सर्वेषां ऋषिमुख्यानां संमतं संशयं विना ॥२७॥

बहुत जन्मन का जब महाउत्तम पुण्य संचय होता है तब श्रीराम महामोद धाम में प्रीति प्रतीति होत है। सामान्य जनन को महादुर्लभ है। यह रहस्य सब ऋषि शिरोमणिन को मुख्य सम्मत है सन्देह बिना ॥२७॥

बृहद्विष्णुपुराणे श्रीपराशरवाक्यं शिष्यं प्रति

क्व नाकपृष्ठगमनं पुनरावृत्ति लक्षणम् ।
क्व जपो रामनाम्नस्तु मुक्तेर्बीजमनूपमम् ॥२८॥

बृह द्विष्णुपुराण में श्रीपरासरजू का वचन मैत्रेय मुनि प्रति है—स्वर्गादि लोक का गमन तथा सुख कहाँ और श्रीराम-नाम उच्चारन का महत्त्व कहाँ। स्वर्ग से कुछ काल पीछे पतित हो जाता है। जो श्रीरामनाम जपते हैं उनका फेर संसार में आवना नहीं होता। श्रीरामनाम महा मोक्ष की अनूप आश्चर्य अविनाशी अनादि बीज है ॥२८॥

सर्वरोगोपशमनं सर्वोपद्रवनाशनम् ।
सर्वारिष्टहरं क्षिप्रं रामनामानुकीर्त्तनम् ॥२९॥

सर्व रोग ताप उपद्रव कष्ट नाना प्रकार का श्रीरामनामोच्चारन से शीघ्र नष्ट हो जाता है ॥२९॥

नास्ति श्रीरामनाम्नस्तु परत्वं दृश्यते क्वचित् ।
सदृशं त्रिपुलोकेषु सर्वतन्त्रेषु कुत्रचित् ॥३०॥

श्रीरामनाम के सदृश परत्व और किसी का देख नहीं पड़ता है, कोई वेद पुरान तन्त्रन में, कोऊ लोक में ॥३०॥

राम रामेति यो नित्यं मधुरं जपति क्षणम् ।
स सर्वसिद्धिमाप्नोति रामनामानुभावतः ॥३१॥

राम राम राम महामधुर धुनि से सनेह सहित जो छन भरि भी रटन करते हैं तिन बड़भागिन को सर्व सिद्धि मोक्ष पाँचहू तथा श्रीसीताराम सम्बन्धी परमानन्द प्राप्त होता है ॥३१॥

परानन्दे सुधासिन्धौ निमग्नो जायते जनः ।
यदा श्रीरामसन्नाम संस्मरेद्भावनायुतः ॥३२॥

परमानन्द सुधा समुद्र में सो सज्जन निमग्न हो जाता है शीघ्र ही जौन विवेकी श्रीराम स्वरूप को भावना ध्यान समेत नाम रटन करता है सो महासुखी है, शास्त्र का विशेष सम्मत है के नाम जप समय नामी का ध्यान करि लेवे ॥३२॥

प्रायो विवेकिनः सौम्य वेदान्तार्थैक नैष्ठिकाः ।
श्रीमद्रामेशभद्रस्य नाम संराधने रताः ॥३३॥

हे शिष्य ! विशेष से जो सत असत विवेचन करनहारे विवेकी हैं वेदांत बिचार पारायन हैं, सो श्रीमान् नामापराधन ही में रुचि शुचि करते हैं, कलियुगी ज्ञानिन की कथा भिन्न है ॥३३॥

तावदेव मदस्तेषां महापातक दन्तिनाम् ।
यावन्न श्रूयते रामनामनाम पञ्चाननध्वनिः ॥३४॥

महापाप जो ब्रह्महत्यादिक, सोई मतवारे हाथी हैं तिन सबका बल जोर तबहीं तक है देह रूप वन में। जब तक श्री-रामनाम महाधुनि पञ्चानन सहस्र सम श्रवन में सुनि न परयो। अभिप्राय इह है के नाम रटन से सब पाप नाश हो जाते हैं ॥३४॥

अविकारी विकारी वा सर्वदोषैकभाजनः ।
परमेशपदं याति सीतारामानुकीर्त्तनात् ॥३५।

अविकारी होय चाहे कोटिन विकार समेत होय, सो भी श्रीसीताराम नामोच्चारन से परम प्रभु के धाम में जायगो सन्देह बिना । ३५॥

हे जिह्वे रससारज्ञे सततं मधुरप्रिये ।
श्रीरामनामपीयूषं पिबप्रीत्या निरन्तरम् ॥३६॥

हे जिह्वे ! रससार की जाननेवारी ! मधुर प्रिये ! सब प्रकार तुझको चाहिये के श्रीरामनाम परम रस धाम निरन्तर पान करो ॥३६॥

नातः परतरोपायो दृश्यते सम्मतौ श्रुतौ ।
सारात्सारतमं शुद्धं सर्वेषां मुक्तिदं परम् ॥३७॥

श्रीरामनाम से अपर उपाय श्रुतिन में तथा सज्जन के सम्मत में देख नहीं पड़ता है, सकल सारन को सार शुद्ध मोक्ष-प्रद श्रीनाम है ॥३७॥

स्वाभाविकी तथा ज्ञान क्रियाद्याः शक्तयः शुभाः।
रामनामांशतो जाता सर्वलोकेषु पूजिताः ॥३८॥

स्वभाविकी जो शक्ति सच्चिदानन्द स्वरूपिनी तथा ज्ञान शक्ति सकल सृष्टि करन समर्थ शक्ति, तैसे ही अनन्त शक्ति श्रीरामनाम अंश से संभव होती है । सकल लोक में पूजी जाती है, श्रीरामनामानुरागी को सर्व शक्ति प्राप्त हो जाती है, नाम कृपा से ॥३८॥

लघुभागवते

ज्ञानं वैराग्यमेवाथ तथा प्रीतिः परात्मनि ।

मंत्रभेत्राममसंकीर्त्यं ह्यभिरामाख्यमद्भुतम् ॥३९॥

लघु भागवत में कहा है—ज्ञान जो श्रीराम को जानना वैराग्य विषयन में सर्वथा रागाभाव, प्रीति सेवा सनेह तत्परता श्रीराम में, सो सब श्रीरामनाम अभिराम के उच्चारन से प्राप्त हो जाता है संदेह बिना ॥३९॥

बृहन्नारदीये

ते कृतार्थाः सदा शुद्धाः सर्वोपाधि विवर्जिताः ।
नाम्नः प्रभावमासाद्य गमिष्यन्ति परंपदम् ॥४०॥

बृहन्नारदीय पुरान में कहा है। श्रीनारदजी कहते हैं—जो श्रीरामनाम उच्चारन करते हैं सो सदा शुद्ध हैं सकल उपाधि वर्जित हैं श्रीनाम के प्रभाव से परमपद विशेष रूपसे ही जायँगे संशय नहीं है ॥४०॥

रामनाम परा ये च नामकीर्त्तनतत्पराः ।
नाम्नः पूजापरा ये वै ते कृतार्थाः न संशयः ॥४१॥

श्रीरामनाम ही में तन, मन, वचन, मति, गति, रति द्वारा तत्पर हैं, श्रीरामनाम तथा श्रीरामनाम जापक की पूजा करते हैं, सो सज्जन कलिकाल में भी कृतार्थ हैं ।४१॥

तस्मात्समस्तलोकानां हितमेव मयोच्यते ।
रामनाम परान् मर्त्यान्न कलिर्बाधते क्वचित् ॥४२॥

हे प्यारे ! ताते सकल जीव मात्र का हम हित कहते है सो सावधान होय के सुनो श्रीरामनामानुरागी को कलिकाल कराल की बाधा न होगी और सब घायल हो जायँगे, ताते श्रीनाम रटो ॥४२॥

श्रीमद्रामेशनाम्नस्तु सततं शरणं व्रजेत् ।

अस्माकं सत्समाजेषु पापान्तरमनर्थकम् ॥४३॥

श्रीमान् जो परमेश्वर श्रीराम हैं तिनके नाम की शरन हो जाय नाम ही को अपना रक्षक घर उपाय सब माने औ हम सबन के समाज में नाम बिना सब उपाय अनर्थ का कारन है ॥४३॥

सकृदुच्चारयेदेतद्रामनाम कलौयुगे ।
ते कृतार्था महात्मानस्तेभ्यो नित्यं नमो नमः॥४४॥

श्रीरामनाम को जो कलियुग में एक बार उच्चारन करते हैं सो भी कृतार्थ रूप हैं, तिनको मेरी नमस्कार बारम्बार है आश्चर्य श्रीरामनाम महत्व है ॥४४॥

न्यूनातिरिक्तासिद्धि कलौ वेदोक्तकर्मणाम् ।
नाम संकीर्त्तनादेव सम्पूर्णं फलदायकम् ॥४५॥

कलियुग में वेद सम्बन्धी कर्म न्यूनाधिक हो जाते हैं, सो श्रीरामनामोच्चारन सम्बन्ध से सम्पूरन फलदायक हो जाते हैं, श्रीनाम सदा जपे जावो ॥४५॥

सीतारामात्मकंनाम सुधाधाम निरन्तरम् ।
ये जपन्ति सदा भक्त्यातेषां किञ्चिन्न दुर्ल्लभम् ॥४६

श्रीसीताराम स्वरूप नामसुधाधाम जो सदा सनेह सहित जपते हैं तिनको कोई पदार्थ इहाँ उहाँ की कमती नहीं रहती है ॥४६॥

नमः श्रीरामचन्द्राय परमानन्दरूपिणे ।
निवसद्यस्य जिह्वायां तस्याघं नश्यति क्षणात् ॥४७॥

श्रीरामचन्द्र परमानन्द स्वरूप नाम नमस्कार समेत जिसके जीभ पर विराजमान होते हैं, तिनके सब पाप छनमात्र में नाश

हो जाते हैं ॥४७॥

स्वपन्भुञ्जन्व्रजंस्तिष्ठन्नुत्तिष्ठंश्चवदंस्तथा ।
येषां संकीर्त्तनंनाम तेभ्यो नित्यं नमोनमः ॥४८॥

सोते, भोजन पावते, उठते, बैठते, बोलते चलते सब समय में जिन सज्जनन को श्रीरामनाम उच्चारन होता है, तिन समान महात्मा कोई नहीं है, तिनको बारबार मेरी नमो नमः है वह सब भाँति पूज्य हैं ॥४८॥

नामसंकीर्त्तनंनित्यं क्षुत्तृट्स्खलनादिषु ।
करोति प्रेम संहीनस्सोपि श्रीरामकिंकरः ॥४९॥

श्रीरामनाम का कीर्तन भूख, प्यास, गिरने समय, चाहे जौन भांति प्रेम बिना भी करे सो भी श्रीरामकिंकर है । धीरे-धीरे यथार्थ हो जायगा, संशय न करना, श्रीनाम का महाप्रभाव है ॥४९

अहोचित्रमहोचित्रमहोचित्रमिदंपरम् ।
रामनाम्नि स्थिते लोके संसारं वर्त्तते पुनः ॥५०॥

बड़ा आश्चर्य है, बारम्बार आश्चर्य है देखो प्रत्यक्ष इस लोक में विद्यमान श्रीरामनाम तौ भी संसृति बना है, अभिप्राय इह है के श्रीरामनाम से सनेह नहीं करते हैं, ताते दुखिया हैं॥५०॥

मित्रद्रोही कृतघ्नश्च स्तेयी विश्वासघातकः ।
दुहितासंगमी दुष्टो भ्रातृपत्नीरतस्तथा ॥५१॥

मित्रन का द्रोही; कृतघ्नी, महानीच, चोर, विश्वासघाती तथा बेटी के संग, भौजाई के संग विषय करने वाला दुष्ट ॥५१॥

विप्रदाराररतो यस्तु विप्रवित्तापहारकः ।
परापवादकारी च बालघाती च वृद्धहा ॥५२॥

विप्र नारी तथा विप्र धन का हरनेहार परनिन्दक बालघाती, बृद्धन का मारने वाला ॥५२॥

स्त्रीजनानां संघाती हिंसकः सर्वदेहिनाम् ।
मातृगामी गुरुद्रोही रामनाम्ना विशुद्ध्यति ।५३॥

स्त्री जनन का घातक, सब जीवन का द्रोही, माता के संग भोग करने वाला, गुरुद्रोही इत्यादिक महापापी है, सो भी श्री रामनाम उच्चारन प्रभाव से विशेष शुद्ध हो जाय, श्रीरामनाम का महाप्रभाव है। विचारो सावधान होय के जो इन पापन का प्रायश्चित धर्मशास्त्र अनुसार कोई करने लगै तौ केते जन्म चाहिये औ श्रीरामनाम संकीर्तन मात्र से शीघ्र नाश हो जाता है तो भी अभागिन की रुचि नहीं होती, महा आश्चर्य है॥५३॥

महाचिन्ताऽऽतुरो यस्तु महाधिव्याधिव्याकुलः ।
ज्वरापस्मारकुष्ठादि महारोगैः प्रपीडितः ॥५४॥

महा चिन्ता में जो व्याकुल हैं, भीतर की पीड़ा, बाहर की पीड़ा से महा पीड़ित है, ज्वर, मूर्च्छा, महाकुष्टादिकरोग करिके ग्रसित हैं ॥५४॥

महोत्पातमहारिष्टमहाक्रूरग्रहार्दितः ।
महाशोकाग्निसंतप्तस्सर्वलोकैस्तिरस्कृतः॥५५॥

महाउत्पात, महारोग कष्ट, महा नीच ग्रह से पीड़ित है महाशोक रूप अग्नि से पीड़ित, सकल लोकन से अनादर ॥५५॥

महानिन्द्यो निरालम्बो महादुर्भाग्यदुःखितः ।
महादरिद्री संतापी सुखीस्याद्रामकीर्तनात ॥५६॥

महानिंदा का पात्र है, जिसका आश्रय कोई नहीं, महादरिद्रा, दुःखित, सब भाँति से क्लेश पीड़ित सो भी श्रीरामनाम

प्रताप उच्चारन से शुद्ध हो जाता है। सब पीड़ा उसके स्वपन में भी नहीं रहते साँच जानना, विश्वास करना ॥ ५६ ॥

कामक्रोधातुरः पापी लोभमोहमहोद्धतः ।
रागद्वेषादिभिर्दग्धो महादुर्वासनाऽऽवृतः ॥५७॥

काम, क्रोध, लोभ मोहादि में आसक्त महा अहंकारी, राग द्वेष रूप अग्नि में दग्ध, महा कुवासना समेत ॥ ५७ ॥

षड्भिरूर्मिभिराक्रान्तः षड्विकारैर्विखिद्यतः ।
मनोराजकषायाद्यैर्व्याकुलः समुपद्रवैः ॥ ५८ ॥

क्षुधा, तृषा, शोक, मोह, जरा, मरन षट उर्मिन सहित सब विकार समेत, खेद युक्त, मनोराज मलीनता, उपद्रवन के सहित ॥ ५८ ॥

अन्यैश्चविविधोत्पातैर्दारुणैरतिदुखितः ।
रामनामानुभावेन परानन्दमवाप्नुयात् ॥५९॥

और अनेक उपाधि बड़े बड़े विघ्न समेत भी हैं तो भी श्रीरामनाम प्रताप से सब दोष दुःख रहित होय के परमानन्द पावेंगे सही। श्रीनाम जपे जाय सदा ॥ ५९ ॥

किंतीर्थैःकिंव्रतैर्होमैः किंतपोभिः किमध्वरैः ।
दानैर्ध्यानैश्च किंज्ञानैर्विज्ञानैः किंसमाधिभिः॥६०॥

तीर्थ, व्रत, होम यज्ञ, तप; दान; ध्यान; विज्ञान समाधिन से कौन काम है ॥६०॥

किंयोगैः किंविरागैश्च जपैरन्यैः किमर्चनैः ।
यन्त्रैःमन्त्रैस्तथातन्त्रैः किमन्यैरुग्रकर्मभिः ॥६१॥

योग; विराग; नाना जप से; पूजा से तन्त्र मन्त्र से कष्ट रूप कर्मन से कहा काम है। श्रीरामनाम उच्चारन से सब सुख

प्राप्त होयगो ।। ६१।।

स्मरणात्कीर्त्तनाच्चैव श्रवणाल्लेखनादपि ।
दर्शनाद्धारणादेव रामनामाखिलेष्टदम् ।।६२।।

श्रीरामनाम श्रवन, कीर्त्तन, लेखन, दर्शन, धारन से सब मनोरथ सम्पूर्ण होयगो ।।६२।।

आदित्यपुराणे श्रीमहादेव वाक्यं शिवां प्रति

अहं जपामि देवेशि रामनामाक्षरद्वयम् ।
श्रीसीतायाः स्वरूपस्यध्यानं कृत्वाहृदिस्थले ।।६३।।

आदित्य पुरान में श्रीमहादेव जी का वचन पार्वती प्रति है—हे देवतन की स्वामिनी ! हम राम दो अक्षर उच्चारन करते हैं परन्तु श्रीसीता स्वरूप का ध्यान हृदय में तथा नाम में करि लेते हैं ।।६३।।

रामनाम्नि स्थितास्सर्वे भ्रातरः परिकरास्तथा ।
गुणानां निचयं देवि तथा श्रीधाममङ्गलम् ।।६४।।

श्रीरामनाम में सब भाई सब परिकर समस्त दिव्य भव्य गुन विराजमान हैं नाम से बाहर कुछ पदार्थ नहीं ! ऐसे श्रीरामनाम को जब श्रद्धा विश्वास सहित जपे तब सब पदार्थ प्रगट पेखलेय सन्देह नहीं ।।६४।।

तत्रैवादित्य वाक्यं ऋषीन् प्रति

रामनाम जपादेव भासकोऽह विशेषतः ।
तथैव सर्वलोकानां क्रमणे शक्तिवानहम् ।।६५।।

वाही ठौर श्रीसूर्य्य का वचन मुनिन प्रति है । श्रीरामनाम जप के प्रभाव से हम सब लोक के प्रकाशक तथा लांघने वाले हुए हैं विशेष से ।।६५।।

नामविश्रब्धहीनानां साधनान्तरकल्पना ।
कृतामहर्षिभिस्सर्वैः परमानन्दनैष्ठिकैः ॥ ६६॥

नाम विश्वास हीनन के अर्थ नाना साधन की कल्पना मुनिन ने कियां यद्यपि वह सब श्रीरामनाम परमानन्द में तत्पर रहे ॥६६॥

आङ्गिरसपुराणे

नामसंकीर्त्तनात्सर्वं मङ्गलं शाश्वतं शुभम् ।
सामीप्यं रामचन्द्रस्य तथा सर्वार्थ संचयः ॥६७॥

आङ्गिरस पुरान में कहा है---श्रीरामनाम कीर्त्तन से महा-मङ्गल एक रस तथा श्रीसीताराम की सामीप्यता सम्पूर्ण सुख प्राप्त होता है ॥६७॥

श्रीरामेति मनुष्यो यः समुच्चरति सर्वदा ।
जीवन्मुक्तो भवेत्सो हि साक्षाद्रामात्मकः सुधीः ॥६८॥

श्रीरामनाम जौन जन सनेह सहित उच्चारन करता है सदा सो जीवन्मुक्त है, श्रीरामरूप है संसारी नहीं, श्रीरामरूप है साक्षात् ॥६८॥

सुरद्रुमचयं त्यक्त्वा ह्यैरण्डं समुपासते ।
यस्यान्यसाधने प्रीतिस्त्यक्त्वा श्रीनाममङ्गलम् ।६९

कल्पबृक्ष समूह को त्यागि के सो महामूढ़ रेंड अपावन बृक्ष का सेवन करता है, जिसकी प्रीति रामनाम बिना अन्य साध-नन में लगी है सो महामूढ़ है ॥६९॥

आभ्यन्तरं तथा वाह्यं यस्तु श्रीराममुच्चरेत् ।
स्वल्पायासेन संकाशं जायते हृदि पंकजे ॥७०॥

सर्वदा सावधान समेत समोद भीतर तथा बाहर से जो